# REVELATION 14 SERIES, STUDIES #26 THRU #30, by Chris McCann-Hindi

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक **#26 - #30** क्रिस मॅकन – हिन्दी

**Revelation 14 Series, Study #26 by Chris McCann, originally aired September 16, 2014**

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 26, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण 16 सितंबर 2014

नमस्कार! इंटरनेट बाईबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाईबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 26 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:11 का अध्ययन करते आ रहे है :

**और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा।**

हम पिछले दो अध्ययनों से इस पद की ओर देख रहे है, और हमने देखा कि बाईबल ऐसे किसी निष्कर्ष की अनुमती नही देती जिसका संबंध अनंतकालीन दंड से है जो बिना अंत के हो, और ना ही "अनंत विनाश" की कल्पना, जो मंडली युग में सैकडों वर्षों से धर्मपंडित और कलीसियाओं ने सिखाई है। **"नरक"** कहलानेवाली जगह की कल्पना, जहाँ लोग बिना किसी अंत के यातनाए सहेंगे, बाईबल में नही है। व्यवस्थाविवरण 25 पद 1 से 3 में परमेश्वर की व्यवस्था का अंश है जो कहती है कि न्यायी "चालीस कोडों" से ज्यादा नही मार सकता। इस व्यवस्था से जो महत्वपूर्ण नियम बनाया गया वह यही कि न्यायी अपराधी को बिना किसी सीमा के दंड नही दे सकता – अर्थात दंड की एक अवश्य सीमा होनी चाहिए। बाकी संपूर्ण बाईबल इस बात को सुस्पष्ट करती है, और हम समझते है कि परमेश्वर ने कई शास्त्रलेखो में जो बार बार कहा है वह यही कि दुष्ट का अंत होगा। दुष्टों का "नाश होगा", या वो "छेद दिये" जाऐंगे, या "नही रहेंगे" यह बाईबल की भाषा है और परमेश्वर इसे बाईबल में बार बार दोहराते है। तो भी हमने गुजरे समय में इन बातों को गलत रीति से पढा, ताकि "नरक" कहलानेवाली अनंत पिडा के स्थान पर दुष्टों के दंड को लागु करने की कोशिश की जा सकें। ऐसी कोई जगह बनाई नही जाएगी, क्योंकि "नरक" कब्र है, मृत्यु जीवन का और दुष्ट मनुष्यों के अस्तित्व का अंत है, और उन्हें फिर कभी कोई ज्ञान न होगा।

इसका अर्थ यह है कि जब हम प्रकाशित वाक्य 14:10 जैसे पदों को पढते है जहा लिखा है "**और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा**" तब हमें और नजदीकी या गहराई से देखना चाहिए। क्या हम किसी बात से चुक रहे है? यह अनंत, असिमित न्यायदंड नही हो सकता, इसलिए यह कुछ और हो सकता है। जब हम "के लिए" इस ग्रिक शब्द की ओर देखते है जो स्ट्रॉंग की शब्दसूची में 1591 नंबर पर है, तब हम पाते है कि "के लिए" जैसे

छोटे शब्द हमें ज्यादा मदत नही करेंगे क्योंकि उनका उपयोग इतनी बार किया गया है कि स्ट्रॉंग की शब्दसूची में एक सूची है जिसमें उन सभी जगहो का उल्लेख है जहा वे पाये जाते है, लेकिन ज्यादा कुछ मदत नही मिलती। यदि आप ब्रिटिश शब्दकोष में पढे तो आप उन सभी जगहो को जहा उनकी सूची है, और भिन्न भिन्न अंग्रेजी के शब्द जिनमें उनका अनुवाद है, देख सकते है, और आप पाएँगे कि इस शब्द का अनुवाद "में" या "उसने" किया गया है। उदाहरण के लिए आप मत्ती 2 का 7 वा या 8 वा पद पढें, आप पाएँगे कि इसका अनुवाद "तक" किया हुआ है। आप मत्ती अध्याय 2 के पदों 11, 12 और 13, 14, 20 और 21 में इसका अनुवाद "में" किया हुआ भी पा सकते है। "के लिए" इस विशेष शब्द का अनुवाद कैसे अक्सर या तो "तक" या फिर "में" किया गया है इसका यह एक छोटा नमुना है। एक बार जब हम उसमें अदला बदली करते है, इसकी अनुमती बाईबल देती है, क्योंकि परमेश्वर अन्य कई वचनों में उसका उपयोग करते है, तब हम यह पद इस तरह पढ सकते है : "उनकी पिडा का धुँआ उपर 'तक' हमेशा हमेशा के लिए" या "जगत के विनाश तक और नया आकाश और नयी पृथ्वी की उत्पत्ती तक या अनंतकालीक भविष्य में प्रवेश होने तक उठता रहा।" यहाँ पर यही विचार दिया जा रहा है और यह वही विचार है जो हम प्रकाशित वाक्य 20:10 में पाते है :

**और उन का भरमाने वाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में, जिस में वह पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा, और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे॥**

"के लिए" यह शब्द वही ग्रिक शब्द "eis" है (स्ट्रॉंग शब्दसूची नंबर 1591) इसलिए यह "अनंतकाल तक" है। यह संसार के अंत तक और जब तक यह संसार चलता है तब तक "दिन और रात" है, जैसे उत्पत्ती की किताब में लिखा है, जब परमेश्वर ने महाप्रलय के बाद कहा कि वह अब कभी पृथ्वी पर, अंत के समय तक, ऐसा विनाशकारी प्रलय नही लाएगा। उत्पत्ती 8:22 में लिखा है :

**अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएंगे॥**

परमेश्वर ने कहा "जब तक पृथ्वी बनी रहेगी" "दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएँगे" और यहा अभिव्यक्ति यह है कि, जैसा इब्रानीयो 12 में बाईबल कहती है, जब पृथ्वी हिलाई और चली जाएगी तब से अब "दिन और रात" न रहेंगे। परमेश्वर हमें प्रकाशित वाक्य 21 में नए आकाश और नई पृथ्वी के विषय में बताते है कि वहाँ "कोई रात न होगी।" समय का चक्र चलानेवाले सुर्य, चंद्र और तारें (आकाशिय घडी जिसे परमेश्वर ने जगत के इतिहास के दौरान समय पर प्रभुता करने उपर आकाश में रखे है) उन्हें इस संसार के विनाश के साथ नष्ट किया जाएगा, इस संपुर्ण विश्व को जलाकर पिघला दिया जाना है,

जैसे कि हम 2 पतरस अध्याय 3 में पढते है। इसलिए, समय जो कि इस सृष्टी का भाग है, अब न रहेगा। प्रकाशित वाक्य 10:6 में जो लिखा है उसे याद करे :

**और जो युगानुयुग जीवता रहेगा, और जिस ने सवर्ग को और जो कुछ उस में है, और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को और जो कुछ उस में है सृजा उसी की शपथ खा कर कहा, अब तो और देर न होगी।**

जब इस संसार का विनाश होता है और जब इस सुपूर्ण विश्व का विनाश होता है तब समय खत्म हो जाएगा। अब ना तो समय होगा और ना ही दिन और रात रहेंगे। दिन ओर रात संम्भव नही है क्योंकि जब तक पृथ्वी रहती है तब तक ही समय चलता है, परंतु जब पृथ्वी आकाश और इस संपूर्ण कायनात का विनाश होता है तब अब आगे समय नही रहता और दिन और रात नही हो सकते। हमने अभी अभी प्रकाशित वाक्य 20:10 में जो पद पढा उसे समझने के लिए परमेश्वर ने हमारी यह मदत की है, इस पद में पशु और झुठा भविष्यवक्ता को "**डाल दिया जाएगा, और वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।**

**पीड़ा** सदा सर्वदा चले यह संभव नही है। हमने उसे व्यवस्थाविवरण 25 से देखा है, परंतु दुसरी बात यह है कि, यह संभव नही है क्योंकि "दिन और रात" अनंतकालिन भविष्य में हमेशा हमेशा के लिए नही चलेंगे। इस विश्व का एक बार विनाश होने पर दिन और रात का अंत हो जाता है, इस तरह दोनों बातों में परमेश्वर हमें इस बात का ज्ञान देते है कि अच्छा होगा हम सावधानी बरते कि परमेश्वर क्या कह रहे है और धोका न खाए, क्योंकि मनुष्य बाईबल की अवास्तविक पढाई के द्वारा धोका खाते आया है, जो ऐसा संकेत देते हुए दिखाई पडती है कि पापियों के लिए परमेश्वर का दंड अनंत होगा।

प्रकाशित वाक्य 14:11 में हम यही विचार पाते है :

**और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा।**

यहा पर समय का संदर्भ है जो हमें इस बात का ज्ञान देता है कि जो उस पशु की उपासना करते है (जिनके नाम मेम्ने की जीवनी किताब में लिखे हुए नही है) उनके साथ यह होता है कि उनकी यातना का काल इस संसार के सामान्य अवधी में ही वास्तविक समय में बित रहा है। संसार अब भी यही है और सुर्य उदय होता और अस्त होता है, चंद्रमा रात को दिखता और तारे अब भी आसतान में दिखते है। परमेश्वर ने जगत की उत्पत्ती से इस सुष्टी के ढाँचे में जो चौबिस घंटो की समय अवधी बनाई वह अब भी चलती रही है। घडी का काँटा अब भी "टिक टिक" कर रहा है और समय चल रहा है और इस कारण जब हम ऐसे पदों को देखते है जो ऐसा दर्शाते प्रतित होते है कि दुष्ट जनों को दंड दिया जा रहा है और वे दिन और रात यातनाए सह रहे है, या वहा "रोना और दाँत पीसना" चल रहा है, या उन्हें बाहर के अंधकार में डाला गया है, तब बाईबल के

विश्वासयोग्य विद्याथी को यह पहचानना अवश्य है कि यह दिन रात के 24 घंटो के दौरान इस वर्तमान संसार में हो रहा है। यह सब समय की सिमाओं में हो रहा है। बाईबल की यही शिक्षा है।

वास्तव में सर्वनाश की शिक्षा पर विश्वास करना और साथ ही मसीह के द्वारा उसके आगमन के समय जगत का नाश करना और अब आगे समय का ना होना इन दोनो कल्पनाओ पर विश्वास करना किसी के लिए संभव नही है क्योंकि वहा रोना पिटना और दाँत चबाना नही होगा। यह विचार उस यातना की अनुमती नही देता जिसके विषय में प्रकाशित वाक्य 9 जैसे अध्याय में बाईबल कहती है, वहा पाँच महिनों की पिडा का वर्णन है जो की न्याय के दिन की अवधी का प्रतिक है। ऐसे कई पद है जो संकेत देते है कि दुष्ट लोग किसी न किसी रीति से परमेश्वर की यातनाए भुगत रहे है और इसे "समय" में या "दिन और रात" में अंजाम दिया जा रहा है। इसलिए जब लोग कहते है कि 21 मई 2011 न्याय का दिन नही था, वे कहते है : "ओह, हम प्रभु के आगमन की प्रतिक्षा कर रहे है और जब वह आता है तब अचानक सब कुछ समाप्त हो जाएगा", लेकिन फिर उसके बाद क्या होता है? उन्होंने बाईबल के कई पदों को विचाराधिन नही लिया और न ही संम्पूर्ण बाईबल में उन्हें सटिक बिठाने का प्रयत्न किया। उदाहरण के लिए, हम जानते है कि बाईबल में लिखा है "**उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अन्धियारा हो जाएगा, और चान्द का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे**" यह समय का चक्र संचालित करनेवाली वस्तुएँ है इसलिए यदि यह शाब्दिक संदर्भ होता तो उसका अर्थ जगत का अंत होता। परंतु इस विचार धारा में समस्या यह है कि मरकुस 13:24–25 में समान पदों में यह लिखा है :

**उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अन्धेरा हो जाएगा, और चान्द प्रकाश न देगा। और आकाश से तारागण गिरने लगेंगे: और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी।**

यहा लिखा है कि उन दिनों के महाक्लेश के तुरंत बाद का समय है जिसमें सुर्य अंधकारमय हो जाता है और चुँद्रमा प्रकाश नही दे रहा है और तारें गिर पडें है। यह कैसे संभव है? समय के अस्तित्व के लिए सुर्य, चंद्र और तारों का होना जरूरी है। महाक्लेश के तुरंत बाद परमेश्वर आता है और सुर्य, चंद्र और तारों को नष्ट कर देता है और सब कुछ अंधियारा हो जाता है ऐसा आप सोच भी नही सकते, परंतु संसार अब भी यही है, अब वह एक पल के लिए भी नही चल सकता है और निश्चित ही सुर्य, चंद्रमा और तारों की सक्रियता के बिना 'दिनों' का काल नही हो सकता। इसके अलावा उत्पत्ती 22 में लिखा है कि जब तक "दिन और रात" है तब तक पृथ्वी बनी रहेगी, इसलिए हमें सुर्य, चंद्र और तारों की जरूरत है, तो फिर यह लोग इसका स्पष्टिकरण कैसे करेंगे? मुझें यह कहते हुए अफसोस हो रहा है कि वे इसका स्पष्टिकरण नही देते बल्की वे इन परिच्छेदों को टालते है और वें उन्हें एकसाथ जोडकर नही देखते।

तो भी इसका एक स्पष्टिकरण है। 21 मई 2011 को महाक्लेश का अंत हुआ और आत्मिक रीति से सुर्य अंधियारा हो गया और चंद्रमा (परमेश्वर के वचन की ज्योंति) बुझ गया और तारें गिर पडें जिसका अर्थ है कि ज्योंति के वाहक जो कि विश्वासी है, उद्धार के संदेश को लानेवाले अंधियारें में चले गए। आत्मिक रीति से सुसमाचार की ज्योंति पृथ्वी पर से चली गई, जब की शब्दीक और भौतिक रीति से सुर्य, चंद्र और तारें बने हुए है। "महाक्लेश के बाद उन दिनों में" वह दिन जिसमें अभी हम वर्तमान में जी रहे है, आत्मिक रीति से सुसमाचार की ज्योंति अंधियारा हो गई, परंतु आकाश में ज्योंतियाँ बनी हुई है और वहा "दिन और रात" है जिसमें यातनाओं को अंजाम दिया जा रहा है; यह वह न्याय का दिन है जिसकी पाँच महिनों की यातनाओं के साथ समानता की गई है, उसे भी समय में अंजाम दिया जा रहा है जिस दौरान उस पशु को, झुठे भविष्यद्वक्ता को और उद्धार न पाए जगत के लोगों को उस दिन तक अनंतकाल के लिए यातनाए दी जा रही है जब परमेश्वर के क्रोध का प्याला पुरा हो जाएगा, वह प्याला संम्भवतः न्याय के पूरे 10,000 दिनों का होगा, झोपडियों के पर्व के अंतिम दिन 7 अक्तुबर 2015 को पूरी संभावना है कि हम अनंत भविष्य की शुरूवात पर आएंगे। यातनाओं का अंत होगा और परमेश्वर उद्धार न पाए हुए लोग, पृथ्वी और आकाश इन सभों के विनाश को अंतिम रूप देगा। यातनाए "युगानुयुग" के बिंदु तक पूरी हो चुकी होगी।

प्रकाशित वाक्य 14:11 में हम इसी बात की ओर देखने जा रहे है :

**और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा।**

"युगानुयुग" तक के संदर्भ को याद करे। वह ग्रिक शब्द जिसका अनुवाद "युगानुयुग" किया गया है वह स्ट्रॉंग की शब्दसूची में # 165, "aion" है, और नए नियम में इसका अनुवाद काफी दिलचस्प तरीके से किया गया है। आईयें हम 1 कुरिंथियों 10 से शुरूवात करे। इसके पहले के पदों में परमेंश्वर इस्राएल के इतिहास का और उसके अत्मिक वर्णन का कर रहे थे, और फिर 1 कुरिंथियों 10:11 में परमेश्वर कहते है :

**परन्तु यें सब बातें, जो उन पर पड़ी, दृष्टान्त की रीति पर भी: और वे हमारी चितावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।**

वचन कहता है "जगत के अंतिम समय में" यह बात काफी दिलचस्प है कि यहाँ "जगत का अंतिम समय" (एक वचनी) नही लिखा है, और ऐसा लगता है कि मानो अंत एक से अधीक है। इसमें तब तक कोई अर्थ नजर नही आता जब तक कि हम यह ना समझे कि "जगत" यह शब्द भी "aion" इस ग्रिक शब्द का ही अनुवाद है। इस शब्द का अनुवाद "जगत" कभी कबार ही किया गया है, और इसका अनुवाद ''लोक'' या ''युग'' भी किया गया है। आईये हम इफिसीयों 1:21 पढे :

**सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया।**

यहाँ ''लोक'' यह शब्द "aion" है। इस प्रकार वर्तमान लोक है, और आनेवाला "लोक" है और हम यह जानते है, क्योकि बाईबल कहती है कि वर्तमान पृथ्वी है और ''नई पृथ्वी'' होगी। इफिसीयो 2:2 में लिखा है :

**जिन में तुम पहिले इस संसार की रीति पर, और आकाश के अधिकार के हाकिम अर्थात उस आत्मा के अनुसार चलते थे, जो अब भी आज्ञा न मानने वालों में कार्य करता है।**

यहाँ ''संसार'' शब्द है। यहाँ पर ''संसार'' यह शब्द भिन्न शब्द ''kosmos – कॉसमॉस'' है। यहाँ ''इस संसार की रीति पर'' लिखा है, और कई जगहों पर "aion" का अनुवाद ''युग'' किया हुआ है, और इसी से मुझे इस शब्द को और अधिक बेहतर रीति से समझने में मदत होती है। यदि हम इफिसीयो 2:2 में उसकी अदला–बदली करे तो यह पद कुछ इस तरह होगा "**जिन में तुम पहिले इस युग की रीति पर.....चलते थे**" यह स्वंय जगत नही बल्की जगत का एक ''युग'' या ''काल'' है। इफिसीयो 2:6–7 में लिखा है :

**और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया। कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए।**

यहाँ ''समयों'' यह शब्द "aion" है। इस प्रकार परमेश्वर ऐसे ''समयों'' के विषय में कह रहे है जो आनेवाला है। 1 कुरिंथीयों 10:11 में परमेश्वर कहते है कि इस ''युग'' का अंत होगा और आनेवाले ''समयों'' है। बल्की यह शब्द समझना कठीन है; इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम सब उसके अर्थ को समझे। इब्रानीयो 9:26 में लिखा है :

यहाँ ''युग'' शब्द "aion" है। वहाँ पर ये शब्द वास्तव में बहुवचन है, इस तरह यहाँ लिखा है कि ''युगो के अंत में वह एक बार प्रकट हुआ है'' अब मसीह सन 33 में प्रकट हुए, ताकि जो उसनें जगत की नीव रखे जाने के पूर्व किया था उसे प्रदर्शित करे। यीशु जब सन 33 में प्रकट हुए तब वह ''युगो का अंत था'' ऐसा संकेत परमेश्वर दे रहे है। सन 33 में ''युगो का अंत था'' ऐसा परमेश्वर क्यों कह रहे है?

मुझे लगता है, जब हम बाईबल आधारीत इतिहास को देखते है, तब हम जगत की सृष्टी को देखते है, और फिर ऐसा समय आया जब जलप्रलय हुआ – यह सृष्टी से 6023 से लेकर इसापूर्व 4991 में आये जलप्रलय तक एक भिन्न समय था। और फिर जलप्रलय के बाद इस्राएल की स्थापना तक एक सामान्य इतिहास खुलता है, क्योंकि परमेश्वर ने अब्राहम

के घराने के साथ अपना कार्य शुरू किया, वह भी जलप्रलय से अब्राहम तक एक भिन्न समय था। फिर राष्ट्रीय इस्राएल की स्थापना से लेकर मसीह तक एक और भिन्न समय था। सन 33 में हम मसीह से कलीसियाई युग का आरंभ देखते है, और यह युग 1955 वर्ष राहा। ध्यान रखे, हम इसे ''कलीसियाई युग'' कहते है और "aion" इस शब्द का अनुवाद ''युग'' किया जा सकता है। हम पीछे मुडकर बाईबल के इतिहास की ओर देखकर जान सकते है कि कलीसियाई युग के लिए परमेश्वर की योजना उस योजना से पूरी तरह अलग थी जो उसने राष्ट्रीय इस्राएल के युग के लिए बनाई थी। इस्राएल देश की स्थापना के पहले उसने जलप्रलय से लेकर अब्राहम तक विभिन्न लोगों के जीवन में अपना कार्य और व्यवहार किया। और उसके पहले ही जब परमेश्वर ने जलप्रलय से जगत का विनाश किया उस काल तक सृष्टी की उत्पत्ती से एक भिन्न युग, समय या कालखंड था। इस तरह हम ''समयो'' या ''युगो'' को देख सकते है, और मुझे लगता है, यह शब्द बिल्कुल सही–सही रीति से ''युगो'' की ओर संकेत करता है।

Revelation 14 Series, Study #27 by Chris McCann, originally aired September 17, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 27, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण 17 सितम्बर 2014

नमस्कार! ई–बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 27 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:11–12 पढेंगे :

**और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा। पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

पिछले कुछ अध्ययनों में हम पद 11 पर विचार केन्द्रित करते आये हैं और मैं अगली पद 12 पर विचार करने से पहले इस पद की एक और बात पर विचार करना चाहता हूँ। एक बार फिर देखें, प्रकाशितवाक्य 14:11 में यह लिखा है :

**और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा।**

हमने सीखा था कि इसका अनुवाद यह भी हो सकता है – ''और उनकी पीड़ा का धुंआ युगानुयुग तक उठता रहेगा'', और आगे यह लिखा है...

"उनको रात दिन चैन न मिलेगा।"

यह कथन उनके संदर्भ में हैं जो पशु की पूजा करेंगे और बाईबल के अनुसार वे सब जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे है, वे महाक्लेश के दौरान पशु की पूजा करेंगे, उस समय शैतान को संसार और कलीसियाओं पर व्यापक अधिकार दिया गया जैसे पहले कभी नहीं दिया गया था। उसने इस 'अल्प–काल' में सर्वोच्च बनकर शासक किया, जो सटिक 23 वर्षों का काल था। वे सभी जिन्होंने परमेश्वर की उपासना नहीं की, जो केवल उद्धार पाने पर ही संभव है, और वे जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे है उन सभी ने पशु के रूप में शैतान की पूजा की। परिणाम स्वरूप न्याय के दिन, वे परमेश्वर के क्रोध के अधीन होंगे, और वे ही मेम्ने और सन्तों की उपस्थिति में 'आग और गंधक' की पीड़ा में यातनाए भोग रहे है। ये वहीं हैं, जिनके लिये लिखा है, ''उनको रात–दिन चैन न मिलेगा'' हमने 'रात–दिन' की भाषा का अध्ययन किया था और पिछले अध्ययन में हमने उत्पत्ति 8:22 पर विचार किया था :

**अब से जब तक पृथ्वी बनी रहेगी, तब तक बोने और काटने के समय, ठण्ड और तपन, धूपकाल और शीतकाल, दिन और रात, निरन्तर होते चले जाएंगे॥**

तब हमने जान लिया था कि 'रात–दिन' का सम्बन्ध 'समय' से है और यह संसार के कामों के लिये सामान्य रूप में निर्धारित किया गया है, जब अंत में पृथ्वी जाती रहेगी, तब 'रात–दिन' भी नहीं होंगे, इस कारण परमेश्वर उद्धार न पाए हुओं को पृथ्वी पर जो दण्ड दे रहे है, अवश्य है कि 'रात–दिन' दिया जाये जब तक कि 'सूर्य चान्द और तारे' जो आकाश में समय के निर्धारण के लिये है, अपनी–अपनी कक्षाओं में बने रहे। निश्चय ही हम जो पढ रहे थे, उस निष्कर्ष से बाईबल सहमत है। परमेश्वर 21 मई 2011 से अपना क्रोध पृथ्वी पर सभी उद्धार न पाए व्यक्तियों पर उण्डेल रहे है जब तक कि रात और दिन बने रहेगे और तब तक 'रात–दिन' लगातार होते रहेंगे। वहा 21 मई 2011 का, और फिर 22 मई, और फिर रात थी और फिर 23 मई और साथ ही बीते हुए साल भी थे जैसे कि 2011, 2012, 2013, 2014 और अब 2015। 21 मई 2011 से 1600 दिनों तक समय चलता रहेगा ऐसा बाईबल कहती है और फिर 1600 वे दिन, 7 अक्तुबर 2015 को रात और दिन का और इस जगत का भी अंत होगा इसकी पूरी संम्भावना है।

अब आइये, हम प्रकाशितवाक्य 14:11 का शेष भाग पढ़ें :

**.....और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा।**

हम इस पद के अंतिम भाग से परिचित है क्योंकि परमेश्वर पहले ही अध्याय 13 में ऐसी भाषा का उपयोग कर चुके है। यह भाषा प्रकाशितवाक्य 14:9 से मिलती–जुलती है :

**फिर इन के बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, कि जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले।**

हमने देखा कि यह किसी व्यक्ति के मन (विचार) आत्मा और इच्छा की ओर संकेत करता है जो कि शैतान की आधीनता में है। वे उद्धार न पाए लोग है, और वे परमेश्वर के सेवक नहीं है। वे पूरी तरह पाप के वश में है और वे अपने–अपने पाप के पीछे जाते हैं। यह 'चिन्ह' उसके (शैतान) नाम का है, और वे 'दो तिहाई' भाग है, यह तस्वीर 'दो–तिहाई' संसार के उद्धार न पाए हुओं को प्रगट करती है। परमेश्वर कहते हैं – ''उनको रात–दिन चैन न मिलेगा।'' क्या इसका अर्थ यह है कि वे सारी रात शरीर में सक्रिय रहेंगे और सो नहीं सकेंगे? जब यह कहा गया है – 'उनको रात–दिन चैन न मिलेगा', तब इसका क्या अभिप्राय है?

हम जानते हैं कि बाईबल में हम अपने 'मन से अर्थ' नहीं निकाल सकते। जब हम पढ़ते हैं, ''उनको रात–दिन चैन न मिलेगा'', तब हमारे मनों में बहुत से विचार उभरते हैं जैसे कि उन्हें आराम नहीं मिलेगा, वे सो नहीं पाएंगे, इत्यादि। परन्तु ये हमारे अपने विचार (या तर्क) है। 'चैन' का अर्थ क्या है यह समझने के लिये हम परमेश्वर की व्याख्या पर विचार करे। संभवतः मत्ती 11 इसे सबसे अधिक बेहतर रूप में समझाता है, वहाँ हम दो ग्रीक शब्द पाते हैं, एक – स्ट्रॉग शब्दकोष नंबर 372 और दूसरा है स्ट्रॉग शब्दकोष नंबर 373। यही दोनों ग्रीक शब्द प्रकाशितवाक्य 14 की 11 वे पद में भी मिलते हैं, जहाँ लिखा है, 'उनको रात–दिन चैन न मिलेगा।' यहाँ ग्रीक शब्द स्ट्रॉग शब्दकोष नंबर 372 है। तब प्रकाशितवाक्य 14:13 में लिखा है, ''आत्मा कहता है, हाँ अब वे अपने सारे परिश्रम से विश्राम पाएंगे'' और यहाँ स्ट्रॉग शब्दकोष नंबर 373 का उपयोग हुआ है। हमने मत्ती 11 में इन्हीं दो शब्दों का उपयोग देखा था, उस अध्याय की अंतिम तीन पदों में, मत्ती 11:28 में लिखा है :

**हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।**

यहाँ 'विश्राम' शब्द स्ट्रॉग शब्दकोष नंबर 373 है। फिर मत्ती 11:29–30 में यह लिखा है :

**मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है॥**

यहाँ 'विश्राम' शब्द स्ट्रॉग शब्दकोष नंबर 372 है। एक पापी के लिये 'उसकी आत्मा (मनों) में विश्राम' पाने का एकमात्र तरीका (यीशु में) उद्धार है। दुष्टों के लिये कहीं 'विश्राम' नहीं है, (या शांति जैसा कि यशायाह की पुस्तक में लेख है) यदि वे उद्धार के माध्यम से परमेश्वर की दया और अनुग्रह का अनुभव नहीं पातें। जब यीशु पापियों को उनके पास आने के लिये प्रोत्साहित कर रहे थे (वे जो बोझ से दबे थे) उन्होंने कहा, ''तुम अपने मन

(आत्मा) में विश्राम पाओगे'', और उसका संबंध परमेश्वर के उद्धार से है। इस कारण जब परमेश्वर प्रकाशितवाक्य 14:11 में उनके विषय में कहते हैं जो पशु की आराधना (पूजा) करते हैं कि 'उनको रात–दिन चैन न मिलेगा' तब वे हमें क्या बता रहे है? वे बता रहे हैं कि उन लोगों को उस विश्राम का अनुभव नहीं होगा जो उद्धार के दिन में समस्त पृथ्वी के इतिहास में उपलब्ध था। निश्चय, उद्धार तब भी केवल परमेश्वर के चुने हुओं के लिये उपलब्ध था परन्तु उस समय स्वर्ग का द्वार खुला था और परमेश्वर ने अपनी प्रजा का उद्धार किया और उन्होंने ''अपने मन में' विश्राम पाया।''

परन्तु जब 21 मई 2011 को 'न्याय का दिन' प्रारम्भ हुआ और 'आग और गंधक' परमेश्वर के वचन से उण्डेले जाने लगे जो सभी दुष्टों, पृथ्वी पर उद्धार न पाए सभी लोगों पर 'पीड़ा' की एक तस्वीर है। परमेश्वर के क्रोध के इस कालखण्ड में जबकि पृथ्वी पर सामान्य रूप में दिन–रात हो रहे हैं, पशु की पूजा करने वाले किसी भी दुष्ट को चैन नहीं मिलेगा, एक बार जब उद्धार का द्वार बन्द हो जायेगा उनके मनों को चैन नहीं मिलेगा। उनके लिये विश्राम नहीं है, वे दिन–रात बेचैन रहेंगे, जब तक यह कालखण्ड समाप्त नहीं होगा। दूसरे शब्दों में कहे तो उद्धार नहीं होगा। एक बार फिर हम एक महत्वपूर्ण शिक्षा पर आ रहे हैं जिसे परमेश्वर ने इस कालखण्ड के लिये बार–बार बताया और दोहराया है। ''न्याय का दिन'' वह दिन है जिसमें परमेश्वर ने उद्धार का कार्य करना बन्द किया। जैसा प्रभु यीशु ने यूहन्ना 9:4 में कहा था, ''मुझे उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है, जिसने मुझे भेजा है।'' यहाँ उद्धार के दिन का संदर्भ है। तब वे आगे कहते है, ''वह रात आने वाली है जिसमें कोई काम नहीं कर सकता।'' 'कोई' मनुष्य उद्धार का कार्य नहीं कर सकता, और वह मनुष्य यीशु है। उद्धार का कार्य उसके बाद किसी भी पापी जन के लिये नहीं किया जायेगा। वह कार्य पूरा हुआ। परमेश्वर के सभी चुने हुये ढुंड लिए गये है और उन सबका उद्धार हो चुका है। उसी शिक्षा में इस बात पर भी जोर दिया गया है जहाँ यह लिखा है – ''और उनको रात–दिन चैन न मिलेगा।''

आगे बढ़ते है, प्रकाशितवाक्य 14:12 में यह लिखा है :

**पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

किसी ने ओपन फोरम कार्यक्रम में श्रीमान कॅम्पिंग को इस पद पर प्रश्न पुछा और उन्हों ने कहा कि उन्हें समझ नहीं आया कि यह पद यहाँ पर क्यों रखा गया है। हम समझ सकते हैं कि वें दुविधा में थे, क्योंकि तब हमें यह ज्ञान नहीं था और न इस तथ्य की समझ थी कि परमेश्वर का अभिप्राय और उद्देश्य उसके लोगों को न्याय के दिनों में पृथ्वी पर रखने से था, कि वे पृथ्वी पर उन दिनों से गुजरे। इसी कारणवश, 1थिस्सलुनीकियों 4 में पुनरूत्थान और स्वर्ग पर उठाए जाने के संदर्भ में कहा गया है कि मसीह में मृतक पहले जी उठेंगे और तब जो 'जीवित है और बचे रहेंगे' वे उठाये जायेंगे। यह इसलिये होगा

क्योंकि परमेश्वर के चुने हुये, जो पृथ्वी पर छोड़ दिये गये थे और जीवित थे, वे न्यादिन से होकर गुजरे, और बाईबल की बहुत सी पदें हम पा रहे हैं जो यह सिखाती है, और प्रकाशितवाक्य 14:12 उनमें प्रमुख है। हम यह प्रश्न पूछने के लिये विवश हो जाते हैं, क्योंकि यहा लिखा है, ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में है।'' ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद 'इसी में' किया गया है – वह स्ट्रॉंग शब्दकोष नंबर 5602 "Hode" है, और इसका अभिप्राय ठीक वही है जो अनुवाद कहता है। इसका अर्थ है, 'इसी में', ठीक इसी स्थान या काल में। उदाहरण के लिये यही शब्द मत्ती 12:41–42 में भी उपयोग किया गया है।

**नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्होंने यूनुस का प्रचार सुनकर, मन फिराया और देखो, यहां वह है जो यूनुस से भी बड़ा है। दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।**

जब यीशु ने यह कथन कहा, तब वे स्वयं के संदर्भ में कह रहे थे कि वह वहाँ थे। हम मत्ती 14:8 में पढ़ते हैं :

**वह अपनी माता की उक्साई हुई बोली, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे।**

तब राजा ने यूहन्ना का सिर काटने की आज्ञा दी कि उसे दे दिया जाये और उस ने वह सिर अपनी माँ का दिया। परन्तु जो बात कही गयी थी – ''मुझे यहाँ मंगवा दे'' दूसरे शब्दों में, ''सिर यहाँ लाकर दिया, जाये।'' यह वैसा ही है जैसा हम आज भी यह शब्द उपयोग में लाते हैं। हम अपनी किसी संतान से कह सकते है – ''यहाँ आओ, मैं तुम से बात करना चाहता हूँ'' और वे आते हैं जहाँ भी हम हैं, वहाँ। यही आशय यह शब्द प्रस्तुत करता है। प्रकाशितवाक्य 14:12 में लिखा है – ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो (यहाँ) परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं।'' दूसरे शब्दों में, हम बिल्कुल''यहाँ'' है और हम उस स्थान की अनदेखी नहीं कर सकते जिस स्थान पर परमेश्वर ने इस कथन को रखा है। उसने यह कथन किस स्थान पर रखा है ? क्या किसी पत्री में जो कलीसियाओं को लिखी गयी या ऐसे पत्री में जिसमें आत्मा के फलों पर चर्चा है ? निश्चय ही परमेश्वर कुम्हार है और उसकी सारी सृष्टि उसके पात्र है, विशेषकर मानवजाति, परन्तु परमेश्वर ही है जिसने परमेश्वर के वचन को एक साथ मिलाया और यह स्वरूप प्रदान किया है अर्थात् बाईबल। क्या यह संयोगवश है कि प्रकाशितवाक्य 22 में, बाइबिल की अंतिम पुस्तक के अंतिम अध्याय में, और उसकी लगभग अन्त की पदों में परमेश्वर कहते है, ''यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए तो परमेश्वर उन विपत्तियों को, जो इस पुस्तक में लिखी है, उस पर बढ़ाएगा''? क्या ऐसा लिखना और उस स्थान में

रखना मात्र एक संयोग है? क्या पवित्रशास्त्र के वचन यूं ही वहाँ आ गये, उस पुस्तक के उस अध्याय में, और तब बाईबल समाप्त कर दी गई? नहीं, हम जानते हैं कि यह मात्र संयोग नहीं। हम जानते है कि परमेश्वर अपने वचन को संरक्षित करता और उसकी निगरानी करता है। वही है जिसने परमेश्वर के वचन को संकलित किया और उस स्वरूप में ढ़ाला जैसा आज वह हमारे पास है। स्मरण करें कि नये नियम में भजन संहिता 2 उद्घृत है और वह बताता है कि भजनों का एक क्रम है जिसे परमेश्वर ने निर्धारित किया है। इसलिये परमेश्वर के वचन का आकार–प्रकार वही है जो परमेश्वर ने चाहा। कलीसियाओं को परमेश्वर ने कुछ बातें करने के लिये उपयोग किया, पर स्वयं परमेश्वर ही बहुत–बहुत अधिक सावधानी के साथ अपने वचन पर दृष्टि रखे थे, और उन्होंने ही बाइबिल को वह स्वरूप दिया जो आज है। निश्चय ही वह परमेश्वर थे जिन्होंने प्रेरित यूहन्ना को उभारा कि वह प्रकाशितवाक्य 22 के अंत में निर्देश दे कि कोई उसके वचनों में कुछ न जोड़े। परमेश्वर ने ही प्रेरित यूहन्ना को प्रेरणा दी कि वह प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 में इस संदर्भ में उन बातों को लिखे, इसलिये आओ हम कुछ पीछे जाकर संदर्भ पदों को पढ़ें और समझें कि इस पद के पहले क्या चर्चा थी। प्रकाशितवाक्य 14:8 में यह लिखा है :

**फिर इस के बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुल गिर पड़ा जिस ने अपने व्यभिचार की कोपमय मदिरा सारी जातियों को पिलाई है॥**

बेबीलोन का पतन, न्याय के दिन की तस्वीर है।

प्रकाशितवाक्य 14:9–10 में यह लिखा है :

**फिर इन के बाद एक और स्वर्गदूत बड़े शब्द से यह कहता हुआ आया, कि जो कोई उस पशु और उस की मूरत की पूजा करे, और अपने माथे या अपने हाथ पर उस की छाप ले। तो वह परमेश्वर का प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा।**

यह किसका संदर्भ है? यह न्याय का दिन है। तब आगे प्रकाशितवाक्य 14:10 में लिखा है :

**तो वह परमेश्वर का प्रकोप की निरी मदिरा जो उसके क्रोध के कटोरे में डाली गई है, पीएगा और पवित्र स्वर्गदूतों के साम्हने, और मेम्ने के साम्हने आग और गन्धक की पीड़ा में पड़ेगा।**

यहाँ किस बात पर चर्चा है? यह परमेश्वर का प्रकोप, न्याय का दिन है।

और प्रकाशितवाक्य 14:11 में यह लिखा है :

**और उन की पीड़ा का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उस की मूरत की पूजा करते हैं, और जो उसके नाम की छाप लेते हैं, उन को रात दिन चैन न मिलेगा।**

फिर एक बार, यह न्याय का दिन है और परमेश्वर का प्रकोप समस्त पृथ्वी पर उद्धार न पाए हुये लोगों पर उण्डेला जा रहा है। तब हमारी संदर्भ पद प्रकाशितवाक्य 14:12 है :

**पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

ओह! पर संभव है कि यह एक परिवर्तनकारी पद हो, और परमेश्वर कुछ ''अन्य बातों'' पर चर्चा करे। अब वह विषय को बदल रहे हैं और कुछ अन्य बातों पर चर्चा करेंगे, और यह एक पद है जो न्याय के दिन के विषय पर नहीं, पर कुछ और मसलों पर चर्चा का आरम्भ करेगी। नहीं, क्योंकि देखिये इस पद के बाद चर्चा का विषय क्या है, प्रकाशितवाक्य 14:13–15 में लिखा है :

**और मैं ने स्वर्ग से यह शब्द सुना, कि लिख; जो मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, आत्मा कहता है, हां क्योंकि वे अपने परिश्रमों से विश्राम पाएंगे, और उन के कार्य उन के साथ हो लेते हैं॥ और मैं ने दृष्टि की, और देखो, एक उजला बादल है, और उस बादल पर मनुष्य के पुत्र सरीखा कोई बैठा है, जिस के सिर पर सोने का मुकुट और हाथ में चोखा हंसुआ है। फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से निकल कर, उस से जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकार कर कहा, कि अपना हंसुआ लगा कर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पंहुचा है, इसलिये कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है।**

स्मरण करें कि मत्ती के एक दृष्टांत, अध्याय 13 में, कहा गया है कि ''कटनी'' जगत का अंत है। अब हम एक तस्वीर पाते हैं, जिसमें प्रभु यीशु बादलों पर बैठे हैं, उनके हाथ में पृथ्वी की फसल काटने और संसार के लोगों का न्याय करने के लिये एक चोखा हंसुआ है। यह वही संदर्भ है। यदि हम पूरा वृतान्त पढ़ें, तो प्रकाशितवाक्य 14:16 में लिखा है :

**सो जो बादल पर बैठा था, उस ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ लगाया, और पृथ्वी की लवनी की गई॥**

पद 17 भी वही बात कहती है, और तब प्रकाशितवाक्य 14:18 में लिखा है :

**.....अपना चोखा हंसुआ लगा कर पृथ्वी की दाख लता के गुच्छे काट ले; क्योंकि उस की दाख पक चुकी है।**

प्रकाशिवाक्य 14:19 में यह लिखा है :

**और उस स्वर्गदूत ने पृथ्वी पर अपना हंसुआ डाला, और पृथ्वी की दाख लता का फल काट कर, अपने परमेश्वर के प्रकोप के बड़े रस के कुण्ड में डाल दिया।**

यहाँ भी परमेश्वर का क्रोध वही संदर्भ है, तब प्रकाशितवाक्य 14:20 में नगर के बाहर रस कुण्ड में दाख रौंदे जाने और उसमें से लोहू बह जाने इत्यादि बातों का वर्णन है। इस प्रकार हमारी संदर्भ पद प्रकाशितवाक्य 14:12 के बाद की सभी पदों में संदर्भ एक समान है – परमेश्वर का क्रोध। इसके पहले की पदें, पद 8 से 11 तक, सभी परमेश्वर के क्रोध की चर्चा करती है। इस कारण हम यह प्रश्न करने विवश है कि क्यों, और उत्तर है क्योंकि परमेश्वर ने उस पद को वहाँ इसलिये रखा कि उसकी अनदेखी न हो : ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में है।'' ये संत वे ही है, बाइबिल जिनके बारे में कहती है कि वे प्रभु यीशु मसीह के साथ आते है – ''दस हजार पवित्र।'' ये वे ही पवित्र है जिनकी चर्चा बाइबिल में हैं जब हम न्याय के दिनों से संबंधित अन्य वृतान्त पढ़ते है।

परन्तु हमारी यह पद संकेत करती है कि पवित्र (संत) स्वर्ग में नहीं है, अब तक उन्हें स्वर्ग पर उठाया नहीं गया है, परन्तु वे अब भी पृथ्वी पर जीवित है, और उन्हें धीरज धरने की आवश्यकता है। फिर से प्रश्न उठता है कि वे अब भी पृथ्वी पर क्यों है? यह न्याय का दिन है और परमेश्वर के क्रोध का समय है। यही बात प्रकाशितवाक्य पद 8 से अध्याय के अंत तक, एक–एक पद के द्वारा हमें समझायी जा रहा है।

अच्छा, तो आपने देखा कि परमेश्वर कुछ दिखाना चाहते है (और यह पद एक बड़े सत्य पर प्रकाश डालती है) जो इसके पूर्व संसार के इतिहास में कभी नहीं समझा गया। कोई भी ऐसा नहीं था जिसने यह सोचा कि परमेश्वर तब न्याय लाएंगे जब संसार सामान्य रूप से चलता रहेगा, 24 घण्टो के दिन–रात होते रहेंगे। परन्तु उसी समय परमेश्वर संकेत करते हैं कि पशु की पूजा करने वालों को उस शेष कालखण्ड में, जिसमें रात–दिन होते रहेंगे, 'पीड़ा' में डाला जायेगा। यहाँ (ठीक उसी स्थान और समय में) पवित्र लोगों को धीरज इसी में है।

**Revelation 14 Series, Study #28 by Chris McCann, originally aired September 18, 2014**

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 28, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण 18 सितम्बर 2014

नमस्कार! ई–बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 27 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:12 पढेंगे :

**पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

एक बार फिर मैं इस बात पर संकेत करना चाहता हूँ कि इस पद को न्याय काल के लम्बें वृतान्त के बीच में अर्थात् मानव जाति के अंतिम दण्ड या पीड़ा के काल में रखा गया है। परमेश्वर जो पिछली पदों में कहते आये हैं, उसमें कोई त्रुटि नहीं है, परमेश्वर के क्रोध का प्याला उन्हें दिया जा रहा है जिन्होंने पशु की मूरत की उपासना की। वे महाक्लेश के दौरान उसकी उपासना करते थे। यह वह समय है जब शैतान को छोड़ा गया और परमेश्वर ने उसे प्रभु का नाम दिया, और उस समय उसे इस संसार और चर्च दोनों पर बहुत बड़ा अधिकार और राज्य दिया। उन दिनों में सभी उद्धार न पाए हुये लोग जिनके नाम मेम्ने की जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे गये थे, वे सब उसकी उपासना करते थे। वे परमेश्वर की उपासना नहीं कर रहे थे। वे पाप की सेवा कर रहे थे और इस कारण वे शैतान की सेवा कर रहे थे।

पद 12 के बाद की पदों में, हम 'कटनी' की भाषा देखते है, और प्रभु न्याय के दिन हंसुआ लगा रहे और पृथ्वी की फसल काट रहे है। इस बीच यह पद मिलती है – 'पवित्र लोगों' का धीरज इसी में है'। यहाँ ''इसी में'' के लिए ग्रीक शब्द hode है, उसका अर्थ है, ठीक यहाँ इसी स्थान में या काल में अर्थात् न्याय के स्थान और समय में। यह ठीक वही बात है जो हमने इन दिनों, क्लेश के बाद बाईबल से सीखी है।

किसी मनुष्य ने कभी इस बात को नहीं समझा कि यह पद यहाँ इस संदर्भ में क्यों रखी गई थी। मैंने पहले बताया था कि एक बार किसी ने ओपन फोरम में श्रीमान कॅम्पिग से यही प्रश्न पुछा था कि वे इस पद के विषय में क्या सोचते है। वह कुछ समझाने लगे पर उन्हें पक्का निश्चय नहीं था कि वह पद वहाँ उस स्थान में क्यों थी। यह इसलिये कि हमने पहले कभी सोचा नहीं (न मैंने कभी सुना) कि परमेश्वर के लोग न्याय के दिन पृथ्वी पर जीवित रखें जाएंगे। वास्तव में यह पूरा विचार कि पृथ्वी चलती रहेगी, और परमेश्वर का दण्ड दुष्टों पर आएगा एक नया विचार भी था। हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे थे क्योंकि हमने अनंत नरक नाम की कोई जगह नहीं है, इस अवधारणा के आधार पर विचार किया था। जब हम बाईबल की भाषा पर ध्यान देते हैं कि लोग पीड़ा में पड़ेंगे और वहाँ ''रोना और दाँत पीसना होगा'' और क्लेश के बाद भी दिन (बहुवचन) होते रहेंगे, तब हमें प्रश्न का उत्तर मिलता है। बाईबल पीड़ा के पाँच महीने का उल्लेख करती है, वहाँ 21 मई 2011 से 21 अक्तुबर 2011 तक समय की सीमा विकसित की गई थी, परन्तु तब से हमने सीखा कि 5 महीने एक रूपक (तस्वीर) है और यह शाब्दिक अर्थ में 5 महीने का समय नहीं है – हम उस बारे में सही नहीं थे, यह न्यायदिन के कालखण्ड का आत्मिक चित्रण है, (फिर वह चाहे कितना भी लम्बा हो) और बाईबल संम्भवतः 21 मई 2011 से 1600 दिन प्रस्तुत कर रही है। 1600 दिनों की वह सम्पूर्ण अवधी "पाँच महिनों" के द्वारा दर्शाई जाएगी।

हमने पहचाना कि क्लेश के बाद भी 'समय' और 'दिन' अस्तित्व में होंगे क्योंकि मरकुस 13:24 में लिखा है, ''उन दिनों में, उस क्लेश के बाद सूरज अंधेरा हो जायेगा'' इत्यादि। सूर्य अंधेरा होने और चन्द्रमा के प्रकाश न देने की भाषा का अर्थ है सुसमाचार की ज्योति बुझा दी जाएगी। हमने सोचा कि उन शाब्दिक पाँच महीनों के लिए उद्धार न होगा। अब यह न्याय जो हो रहा था, उसकी एक नयी समझ थी, परन्तु फिर भी हमने सोचा था कि 21 मई 2011 को विश्वासी जन स्वर्ग पर उठा लिये जाएंगे, और पृथ्वी पर से हटा दिये जाएंगे, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध पृथ्वी पर आने वाला है और परमेश्वर कठोरता पूर्वक पृथ्वी पर रहने वालों को दण्ड देने जा रहे है और इस कारण विश्वासियों को पृथ्वी पर छोड़ा न जायेगा।

उसके बाद से हमने बहुत से पद देखे (अधिक से अधिक समय के साथ–साथ) जहाँ परमेश्वर संकेत करते है कि परमेश्वर के लोग पृथ्वी पर जीवित रहेंगे और न्याय के दिन में से होकर गुजरेंगे। 1थिस्सलुनीकियों 4 की पद 16 और 17 वास्तव में इस दिशा में एक बहुत बड़ा संकेत करती है, ''तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिये जायेंगे।'' साथ ही जकर्याह अध्याय 13 में 'एक तिहाई' के आग से परखे जाने और 1 कुरिन्थियों अध्याय 3 में भी उल्लेख है कि एक समय होगा जिसमें ''सोना चान्दी और कीमती पत्थर'' और ''काठ, चारा और भूसी'' आग में परखे जाएंगे, और ''न्याय का दिन'' प्रमाणित (प्रगट) करेगा कि कौन परमेश्वर के चुने हुये लोग है।

एक बार जब इस विशेष धर्मशिक्षा से पर्दे उठ लिए गये, और हमने यह समझ लिया कि परमेश्वर के लोग न्यायदिन से होकर गुजरेंगे, जैसा कि 2कुरिन्थियों 5:10 में लिखा है : "क्योंकि अवश्य है कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाये" दूसरे शब्दों में, ''हमें प्रगट किया जायेगा'' हम वहाँ न्याय के लिये या दण्ड का अनुभव करने के लिये नहीं खड़े होंगे, क्योंकि हमारे पापों का दाम जगत की उत्पत्ति के समय से ही प्रभु यीशु मसीह में चुका दिया गया था। परमेश्वर हमें इस कालखण्ड से होकर गुजरने देंगे ताकि मसीह में हमारी निर्दोषिता प्रगट करे और दर्शाए कि हम में कोई पाप नहीं है क्योंकि हम आग में से गुजरेंगे और दूसरी ओर शुद्ध होकर निकलेंगे। यह निर्णायक रूप में प्रदर्शित करेगा कि परमेश्वर के चुने हुओं में कोई पाप नहीं क्योंकि वे शेष लोगों के समान उस आग में जलेंगे नहीं। पर दूसरे क्यों जल जाएंगे? उनके पापों के कारण क्योंकि उनका कोई उद्धारकर्त्ता नहीं था। परन्तु वे जो आग से (शुद्ध होकर) निकलेंगे, उनसे परमेश्वर को महिमा मिलेगी।

बहुत सी पदें हैं जो यह सिखाती है, पर हम यशायाह के अध्याय में एक स्थल देखेंगे, जहाँ परमेश्वर पृथ्वी पर न्याय का वर्णन कर रहे है। यशायाह 24:4–6 में लिखा है :

**पृथ्वी विलाप करेगी और मुर्झाएगी, जगत कुम्हलाएगा और मुर्झा जाएगा; पृथ्वी के महान लोग भी कुम्हला जाएंगे। पृथ्वी अपने रहने वालों के कारण अशुद्ध हो गई है, क्योंकि उन्होंने**

**व्यवस्था का उल्लंघन किया और विधि को पलट डाला, और सनातन वाचा को तोड़ दिया है। इस कारण पृथ्वी को शाप ग्रसेगा और उस में रहने वाले दोषी ठहरेंगे; और इसी कारण पृथ्वी के निवासी भस्म होंगे और थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे।**

थोड़े ही मनुष्य रह जायेंगे। ''बुलाए हुए तो बहुत है पर चुने हुये थोड़े है'' 'थोड़े' चुने हुये हैं, और वे परमेश्वर अर्थात् सर्वशक्तिमान् के क्रोध के दिन में पृथ्वी पर जीवित है उस समय जबकि परमेश्वर के क्रोध की धधकती आत्मिक ज्वाला जलेगी। उस समय पृथ्वी के बाकी सभी रहनेवाले जल जाएंगे, परन्तु थोड़े ही मनुष्य रह जाएंगे, क्योंकि थोड़े ही आग से गुजरेंगे और शुद्ध होकर निकलेंगे। इस आग में से गुजरकर निकलने के लिये अवश्य है कि आप उसमें हो, और हम स्वयं को ठीक उसी स्थान में पाते हैं, न्याय के दिन पृथ्वी पर जीवित, भले ही कलीसियाओं और धर्मविज्ञानियों ने परम्परागत रूप में हमें कुछ भी सिखाया हो। पिछले दिनों में प्रायः सभी धर्मविज्ञानियों ने कहा है, ''ओह! यह तो संभव नहीं है। ऐसा नहीं हो सकता, परमेश्वर पहले अपने लोगों को स्वर्ग पर उठा लेंगे।" उनका मुद्दा एक ही है, वे केवल एक बात पर तर्क करते हैं, क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं को क्लेश आरम्भ होने से पहले स्वर्ग पर उठा लेंगे या उन्हें क्लेश में जाने देंगे और क्लेश समाप्त होने के बाद स्वर्ग पर उठाएंगे? बीते समय में फॅमिली रेडिओ ने और ई–बाईबल, हम क्लेश के बाद स्वर्ग पर उठाया जाना मानते थे। हम मानते थे कि परमेश्वर अपनी प्रजा को क्लेश से गुजारने देंगे, पर बहुत से धर्मविज्ञानी आज भी यह मानते और प्रचार करते हैं कि परमेश्वर के लोग क्लेश आरम्भ होने से पहले स्वर्ग पर उठाए जाएंगे और वे उस दुखदायी काल में नहीं जाएंगे।

तो भी, महाक्लेश के संबंध में हमने बाईबल से क्या सीखा है? यह आत्मिक न्याय था जिसका आरंम्भ परमेश्वर के घर से हुआ। परमेश्वर ने कलीसियाई युग का अंत किया और पवित्र आत्मा (1988 में) मंडलियों के मध्य से बाहर निकला और परमेश्वर ने अपने लोगों को आज्ञा दी कि वें कलीसियाओं से बाहर निकल आए। कलीसियाओं से बाहर निकलने की उस आज्ञा के द्वारा परमेश्वर ने गेंहुँ और जंगली बीज को अलग करना शुरू किया; वो सब जो पीछे रह गए, वें जंगली बीज थे, और अंत में, महाक्लेश के 23 वर्षों का अंत होने के बाद वें सब जो कलीसियाओं में बने रहें, उन्हें जंगली बीज मानकर गट्ठें बांधे गए क्योंकि चुने हुए सभी पहले ही बाहर आ चुके थे। अब यह समय जगत का न्याय करने का और कलीसियाओं पर न्याय से जगत का न्याय करने का परिवर्तन का समय था। जितनों ने परमेश्वर की आज्ञाओं को नही माना उन्होंने प्रमाणित किया कि वे जंगली बीज थे। उसके बाद 21 मई 2011 को न्याय का दिन आया और पूरे संसार पर आत्मिक ज्वाला भडकाई गई और जंगली बीज को आत्मिक रीति से उस आग में डाला गया। हम कई बार इस विषय पर चर्चा करते है।

मैं जो विचार व्यक्त कर रहा था वह यह है कि धर्मविज्ञानियों का यह सोचना गलत है कि परमेश्वर क्लेश से पहले अपनी प्रजा को इस पृथ्वी से हटा देंगे। परमेश्वर ने उन्हें क्लेश काल में पृथ्वी पर रखा और जो हमने प्रकाशितवाक्य 13 में पढ़ा, क्या वह रूचिकर नहीं है? इस अध्याय पर चर्चा करते समय हम इस विषय पर चर्चा कर चुके हैं। पर यह वह अध्याय है जिसमें बार–बार महाक्लेश काल का वर्णन है। आरम्भ में पशु समुद्र से बाहर निकलकर आता है, यह शैतान के छोड़े जाने की एक अभिव्यक्ति है, उसे कलीसियाओं पर और सारी पृथ्वी पर बड़ा अधिकार और राज्य दिया गया। परन्तु पूरा अध्याय (प्रत्येक पद) पूर्ण रूप में 23 वर्ष के महाक्लेश–काल पर ही केन्द्रित है, अर्थात 21 मई 1988 से 21 मई 2011 तक। इस अध्याय में, प्रकाशितवाक्य 13:5 में हम पढ़ते हैं कि :

**कौन उस से लड़ सकता है और बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुंह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया।**

'बयालीस महीने', 23 वर्ष के महाक्लेश काल की सम्पूर्ण अवधि की तस्वीर है।

तब हम प्रकाशितवाक्य 13:6–8 में पढ़ते हैं :

**और उस ने परमेश्वर की निन्दा करने के लिये मुंह खोला, कि उसके नाम और उसके तम्बू अर्थात स्वर्ग के रहने वालों की निन्दा करे। और उसे यह अधिकार दिया गया, कि पवित्र लोगों से लड़े, और उन पर जय पाए, और उसे हर एक कुल, और लोग, और भाषा, और जाति पर अधिकार दिया गया। और पृथ्वी के वे सब रहने वाले जिन के नाम उस मेम्ने की जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।**

यह जानी पहचानी भाषा है। हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, दानिय्येल की पुस्तक में और बाईबल के कुछ अन्य स्थलों में इन बातों को पढ़ने के आदी हो चुके है। शैतान संतो से युद्ध करता है, उन पर जय पाता है, और यह एक प्रमुख पद है जो बताती है कि उस काल में परमेश्वर शैतान को जीतने देंगे ताकि वे महाक्लेश के समय में जगत की कलीसियाओं और मंडलियों पर न्याय (दण्ड) लाये।

तब इस संदर्भ में जबकि महाक्लेश का वर्णन जारी है, इस चर्चा के बीच में (जैसा कि हमने पहले प्रकाशितवाक्य 14 के बीच में 14:12 देखा था) कलीसियाओं पर न्याय के वर्णन के बीच प्रकाशितवाक्य 13:10 में यह लिखा है :

**जिस को कैद में पड़ना है, वह कैद में पड़ेगा, जो तलवार से मारेगा, अवश्य है कि वह तलवार से मारा जाएगा, पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास इसी में है॥**

आप देख सकते हैं कि इस पद का अंतिम भाग कितना मिलता जुलता है ''पवित्र लोगों का विश्वास और धीरज इसी में है'' फिर हम यह प्रश्न कर सकते हैं, ''क्यों परमेश्वर ने महाक्लेश के संदर्भ में यह कथन कहा है'' ठीक है, हम जानते हैं। यह स्वाभाविक है क्योंकि हमें इस काल से गुजरना है – हम 23 वर्ष के सम्पूर्ण महाक्लेश के काल से गुजर चुके हैं और हमें पीछे देखने का लाभ प्राप्त है। बिना किसी संदेह के हम जानते है कि परमेश्वर ने अपनी प्रजा को पृथ्वी पर छोड रखा है और उसने हमें परखा है, उन्होंने संसार की सभी कलीसियाओं के नामधारी मसीहियों को 'अंत के दिनों में पवित्रशास्त्र के भेदों को खोलने के द्वारा कठोरता से परखा है। प्रभु ने दानिय्येल से कहा था, ''इस पुस्तक की बातों को अंत के समय के लिये मुहर कर दे'' और तब पृथ्वी पर ज्ञान बहुत बढ़ जाएगा। जब परमेश्वर ने अपना वचन खोला, वह बहुत सी धर्म शिक्षाओं के लिये जो हमारे पास पहले से थी, प्रकाश देने वाला ठहरा। परमेश्वर ने हमें सुधारा और उसके वचन के द्वारा 'सुधारने की छड़ी' दी। जब हमने पवित्रशास्त्र की पदों को मिला मिलाकर देखा हम समझ गये कि हम 'नरक' नामक स्थान के विषय में गलत थे। हम इस विषय में गलत नहीं थे कि मसीह ने क्रूस पर हमारे पापों का दाम चुकाया, परन्तु वास्तव में उसने पापों का दाम 'जगत की उत्पत्ति' से पहले ही चुका दिया था। हमने महाक्लेश का यह गुणधर्म सीखा कि वह वास्तव में कलीसियाई युग का अंत था। ऐसा नहीं था, जैसा हमने पहले सोचा था कि सुसमाचार की ज्योति धीरे–धीरे करके बुझेगी, और एक विश्वासयोग्य चर्च को पाना कठिनतर से कठिनतर होता जाएगा, परन्तु कलीसियाओं में से सुसमाचार की ज्योति बुझ चुकी थी, उसी क्षण परमेश्वर का आत्मा उनमें से चला गया और शैतान का आत्मा – चर्चों में प्रवेश कर गया ताकि 'पाप के पुरूष' के रूप में राज्य करे। हमें कलीसियाओं से निकलना पड़ा क्योंकि हम वहाँ आगे नहीं रह सकते थे। इतिहास के इस दुख भरे और बुरे समय में अंत का आरंभ हुआ जब परमेश्वर के घर से न्याय की शुरूवात हुई और हम यही पर ''पवित्र लोगों का धीरज और विश्वास'' पाते हैं, परमेश्वर के चुने हुये यीशु के लोहू से पवित्र किये गये, उसने उन्हें अपने लोहू से धोया और पवित्र किया ताकि परमेश्वर उनमें कोई पाप न देख सके। यहाँ भी हम सबको धीरज धरना है, और यह महाक्लेश के सम्पूर्ण काल के दौरान प्रगट किया जाएगा। यह 23 वर्षों का लंबा महाक्लेश का समय था जिसे संसार ने पहले कभी नही देखा।

प्रकाशितवाक्य 14 में हम इसी प्रकार की संरचना देखते है, पद 8 से लेकर अध्याय के अंत तक न्याय के दिन और संसार के अंतिम न्याय (दण्ड) पर सारी चर्चा केन्द्रित है। हम यही संरचना और बीच में एक पद, जिसमें 'धीरज' का कथन है प्रकाशितवाक्य 14 में भी देखते है, प्रकाशितवाक्य 14:12 में लिखा है :

**पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

धर्म विज्ञानी सोचते थे कि परमेश्वर के लोग क्लेश से होकर नहीं गुजरेंगे, परन्तु इस बारे में वे गलत थे। जी हाँ, परमेश्वर के लोग क्लेश में रहेंगे और जब वे गुजरेंगे, वे उन विशेष गुणों को दर्शाएंगे जिनसे परमेश्वर की महिमा होती है अर्थात धीरज और विश्वास। वे धीरज से अंत तक स्थिर बने रहेंगे और परमेश्वर के वचन की बाट जोहेंगे। वे प्रभु यीशु मसीह के विश्वास के द्वारा यह कार्य करेंगे।

इसी प्रकार, यद्यपि धर्मविज्ञानी पक्की तौर पर मानते हैं कि न्याय के दिनों में पृथ्वी पर 'पवित्र–जन' (संत) नहीं होंगे, वे गलत है। हम धर्म विज्ञानियों की कितनी बातें पिछले दिनों में सही मानते थे लेकिन अब हम उनमें त्रुटियाँ देखते है? हम पिछले दिनों में कैसे धर्मविज्ञानियों की बातों के विषय में नरक की धर्मशिक्षा को लेकर कितने आश्वस्त थे, जैसा वे मानते थे **कि परमेश्वर का क्रोध पापियों पर सदा उण्डेला जाएगा और वे बिना अंत के नरक में पीड़ा पाएंगे?** मैं यह नहीं कह रहा कि उनमें से कुछ धर्मविज्ञानी सच्चे विश्वासी नही थे, पर आप देखिये, परमेश्वर ने एक चेतावनी दी थी, और मैं उसे पढ़ रहा हूँ, मरकुस 13:11 में लिखा है :

**जब वे तुम्हें ले जाकर सौंपेंगे, तो पहिले से चिन्ता न करना, कि हम क्या कहेंगे; पर जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी बताया जाए, वही कहना; क्योंकि बोलने वाले तुम नहीं हो, परन्तु पवित्र आत्मा है।**

यह 'गुप्त भाषा' थी और यह पवित्रशास्त्र अंत के समय तक खोला नहीं गया था। परन्तु यदि वे समझ सकते, धर्मविज्ञानी यह समझ लेते कि परमेश्वर कह रहे थे, "पहले से विचार मत करना कि क्या कहना है, या पहले से चिन्तन न करना कि उस घड़ी में क्या होगा।" परन्तु उस 'घड़ी' में हम बोलेंगे और हम नहीं पर पवित्र आत्मा हम में से होकर बोलेगा। और यह बात परमेश्वर ने उसके वचन में अंत के दिनों के लिये मुहर कर रखी थी। और कुछ अति–विश्वासयोग्य धर्मविज्ञानी जो परमेश्वर के जन थे, जिन्होंने सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखा पर परमेश्वर द्वारा मुहर की गयी बातों को खोल नहीं सके, जिसे परमेश्वर ने अंत के दिनों के लिये मुहर करके रखा था। उनके पास उन्हें जानने का कोई तरीका नहीं था, उन्होंने बाईबल में इन बातों को पढ़ा और टीकाएँ लिखी और उस समय उनकी जैसी समझ थी, उन्होंने अपने मत अभिव्यक्त किये, यह समय वह था जिसके विषय में 1कुरिन्थियों में लिखा है – 'दर्पण में धुंधला सा देखेंगे' और सारी बाते उनसे गुप्त थी। इस कारण उन्होंनें नरक के विषय में लिखा, और न्याय के दिनों के आरम्भ से पहले कलीसियाओ को स्वर्ग पर उठाए जाने के विषय में और बहुत सी अन्य बातों के विषय में भी लिखा, जो त्रुटिपूर्ण था।

हम धर्मविज्ञानियों के लेखन के आधार पर हमारे विश्वास और समझ को निर्धारित नहीं कर सकते वे चाहे कितने भी विश्वसनीय क्यों न थे, हम उनके कुछ लेखों या पुस्तकों को चाहे कितना भी सम्मान (सराहना) क्यों न दे। यह कलीसियाओं का पाप था, उन्होंने उनके अंगीकारों, 'विश्वास–वचनों' और उनके मन पसंद धर्मविज्ञानियों के विशेष लेखों के 'ऊँचे

स्थान' बनाए। वे उनको बहुत अधिक सम्मान का स्थान देते थे, परन्तु यदि कोई पवित्रशास्त्र का कोई वचन दिखाता जो उनके अंगीकार, विश्वास–वचन, धर्मशिक्षा संबंधी बातों या पसंदीदा धर्मविज्ञानियों पर प्रश्न करता, उनका प्रत्युत्तर यह होता, ''ओह नहीं, हमारी कलीसिया का अभिमत यही है, यदि आप सहमत नहीं तो आप किसी और कलीसिया में जाये।'' इस प्रकार वे दर्शाते थे कि उन पर केवल बाईबल का अधिकार नहीं था, पर बाईबल के साथ–साथ उनके अंगीकार, विश्वास–वचन, और उनके विशेष धर्मविज्ञानियों का अधिकार भी था। कभी–कभी यह सुधारकों के लेख थे जिन्हें बाईबल से बढ़कर अधिकार दिया गया और कुछ बिन्दुओं पर बाईबल की बातें अनसुनी कर दी गई।

इस प्रकार, धर्मविज्ञानी ऐसे आश्वस्त करने वाले तरीके से लिख सके कि परमेश्वर अपने लोगों को संसार में नहीं रखेगा, उन्हें न्याय के दिनों से नहीं गुजरना पड़ेगा, जैसा कि उन्होंने लिखा कि नरक नाम की कोई जगह है, **जब परमेश्वर अपने क्रोध का 'आग और गंधक' उद्धार न पाए हुओं पर उण्डेलेंगे और वे सदा तक पीड़ा में रहेंगे।** उन्होंने बहुत ही निश्चयात्मक कथन लिखे है, और वे पूरी तरह आश्वस्त थे, पर वे निश्चित रूप में गलत थे। बाईबल आज यह दर्शाती है कि परमेश्वर के लोग पृथ्वी पर जीवित रखे जाएंगे ताकि वे न्याय के दिन से गुजरे। इस कारण हमें यह शिक्षा बाईबल से मिली है। क्या हम इस पर विश्वास करते हैं या फिर हम उस धर्मशिक्षा के विश्वासों के विरूद्ध जाने में अति असहज है, जो कितने लम्बे समय से हम में भर दी गई है? यदि हम असहमत होते हैं तो यह हमारे लिये व्यक्तिगत रूप में गम्भीर बात है। हमें परमेश्वर के वचन, बाईबल को स्थान देना चाहिये कि वह हम पर एकाधिकार रखें।

Revelation 14 Series, Study #29 by Chris McCann, originally aired September 19, 2014

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 29, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण 19 सितम्बर 2014

नमस्कार! ई–बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 29 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:12 पढेंगे :

**पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

हम पिछले कुछ अध्ययनों से इस पद पर विचार विमर्श करते आये हैं क्योंकि यह अति महत्वपूर्ण पद है। बाईबल में सभी कुछ महत्वपूर्ण है परन्तु यहाँ यह पद एक ऐसी धर्मशिक्षा का खुलासा कर रही है जो पहले अज्ञात थी। महाक्लेश का अंत हुआ तब से यह

जानकारी परमेश्वर ने हमारे लिये खोली है। इसका हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिये क्योंकि हम रोमियों 2:5 में पढ़ते है :

**पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित क्रोध कमा रहा है।**

यहाँ परमेश्वर उन से कह रहे हैं जो सक्रिय रूप में पाप में लिप्त है। यदि उनका कोई उद्धारकर्त्ता नहीं है तो वे ''उसके क्रोध के दिन के लिये'' पाप में पाप जोड़ते जा रहे है, वे क्रोध जमा कर रहे है। हमें यह समझना चाहिये कि पापी जन, जबकि हम इस संसार में रह रहे हैं, पूरे जीवन भर परमेश्वर के क्रोध के आधीन है, यदि परमेश्वर हमारा उद्धार न करे, और यद्यपि हम सामान्य रूप से उसके क्रोध के आधीन है, एक विशेष दिन बाकी है, एक नियुक्त किया दिन, जिसे 'क्रोध का दिन' कहा जाता है। बाईबल इसे 'प्रभु का दिन'या 'यहोवा का दिन' भी कहती है, हमारे पाप जो हम जीवन भर करते रहते है, जबकि हम परमेश्वर के क्रोध के आधीन है, एक अर्थ में जमा होते जाते हैं। वे परमेश्वर के असीमित मन में स्मरण रखे जाते है, वह हमारे एक भी अपराध को नहीं भूलता। वे सब के सब 'क्रोध के दिन' के लिये जमा हैं, और निःसंदेह क्रोध का यह दिन 'परमेश्वर के न्याय' का दिन है।

परन्तु कौन सी बात इस पद को इतना रूचिकर बनाती है, वह यह कि यह क्रोध के दिन के विषय में कहती है। आइये, मैं इसे एक बार फिर से पढ़ता हूँ, रोमियों 2:5 का दूसरा भाग :

**पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित क्रोध कमा रहा है।**

यहाँ 'जिस में' यह शब्द महत्वपूर्ण है क्योंकि वह दो विचारों को जोड़ता है। इस वृतान्त में वह 'क्रोध के दिन' और परमेश्वर के सच्चे न्याय के प्रगट होने को जोड़ता है। यह हमें 'न्याय के दिन' के विषय बताता है, क्रोध का दिन, और इस दिन में परमेश्वर का 'सच्चा न्याय' भी प्रगट होगा।

21 मई 2011 को जब महाक्लेश का अंत हुआ और न्याय के दिन का आरंभ हुआ तब से हम 'परमेश्वर के न्याय' के विषय में बहुत सी बातें सीखते आ रहे है। हमने सीखा है कि यह एक आत्मिक न्याय है जैसा कि कलीसियाओं के लिये था। यह न्याय के दिन तक, उसकी लम्बी कालावधि के अंत तक आत्मिक न्याय ही होगा। तब अंत में परमेश्वर इस संसार को और उसमें के सभी पापियों को इस कालखण्ड के अंतिम दिन में शाब्दिक रूप में नष्ट कर देंगे।

हमने यह भी सीखा कि परमेश्वर के लोग परमेश्वर के क्रोध से प्रज्वलित इस अग्नि में से गुजरेंगे। हम जीवित बचे रहेंगे और पृथ्वी पर रहेंगे, उस अंतिम दिन तक, जब प्रभु आएंगे और वह पुनरूत्थान एवं स्वर्ग पर उठाये जाने का समय होगा, प्रकाशितवाक्य 14:12 ऐसा एक पद है जो हमें यह सत्य सिखाती है। यहाँ न्याय के दिन के संदर्भ में इस प्रकार लिखा है, ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में हैं, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास रखते हैं'' इस प्रकार, परमेश्वर ने हमें जानकारियाँ देना जारी रखा है। महत्वपूर्ण सत्यों में से एक जो हमने 21 मई 2011 से सीखा है, वह पहले कभी धर्मविज्ञानियों, कलीसियाओं या अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा कभी जाना नहीं गया कि परमेश्वर के लोग न्याय के दिन के समय पृथ्वी पर रहेंगे और उसमें से एक महिमामय रूप में गुजरेंगे जिसके अन्त में परमेश्वर को सब बातों में महिमा मिलेगी। परमेश्वर को उसके लोगों में बड़ी महिमा मिलेगी क्योंकि वे दर्शाएंगे और प्रगट करेंगे कि उनमें कोई पाप नहीं था। और इसी प्रकार वे अंत तक बने रहेंगे, जैसा कि बाईबल में लिखा है। क्या मत्ती के अध्याय 24 में परमेश्वर द्वारा कहा गया यह कथन रूचिकर नहीं है? आइये, मैं उसे पढ़ूं, मत्ती 24:11–12 में यह लिखा है :

**और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा।**

वहाँ झूठे भविष्यद्वक्ताओं के उठने और बहुतों को भरमा देने के संबंध में कलीसियाओं के धर्म–परित्याग का संदर्भ है। तब संसार में दुष्टता अति चरम सीमा तक बढ़ेगी, जैसा कि आज हम देखते है, पाप बढ़ता जा रहा है और फिर मत्ती 24:13 में यह लिखा है :

**परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।**

यह वास्तव में एक असाधारण कथन है, जो परमेश्वर ने मत्ती 24 के संदर्भ में कहा है, जबकि प्रभु चेलों के इस प्रश्न का उत्तर दे रहे थे, ''तेरे आने का और जगत के अंत का क्या चिन्ह होगा?'' जी हाँ, उसमें धीरज धरने की आवश्यकता होगी। हमें अंत तक धीरज धरकर बनें रहना है। पहले हम सोचते थे कि हमें 21 मई 2011 तक ही धीरज धरना होगा। हमें उस दिन तक ही विश्वासयोग्य रहना होगा और तब विश्वास करने वालों के लिये यह होगा कि हम संसार से उठा लिये जाएंगे।

परन्तु नहीं, ऐसा नहीं हुआ, परमेश्वर के पास एक दूसरी योजना थी उसने उनके लिये जो उसके वचन पर विश्वास करने का दावा करते हैं और युगों के अंत के संदर्भ में बाईबल जो भी कहती है, जगत की उत्पत्ति के पूर्व मसीह के बलिदान, नरक विषयक धर्मशिक्षा, न्याय के दिन से संबंधित शिक्षाएं, इत्यादि पर विश्वास करने का दावा करते हैं, उनके लिये एक कठोर जाँच का प्रबंध किया है। क्या होगा, यदि परमेश्वर ने घटनाओं का ऐसा क्रम बनाया हो जिससे न्याय का दिन प्रगट नही हुआ, फिर चाहें वैसा ही क्यों न हो जैसा

उसने कहा है उस दिन सब कुछ वैसा ही होगा? यदि परमेश्वर अनुमति दे और उसकी प्रजा को 'न्याय के दिन' के विषय में सत्य बताये और यह तथ्य कि स्वर्ग का द्वार बन्द कर दिया जाएगा, और परमेश्वर क्रोध के दिन संसार को दण्ड देना आरम्भ करेंगे, और वह समय एक लम्बा समय होगा, तब क्या होगा? परन्तु यदि वे इन बातों के भौतिक स्वरूप को लेकर गलत विचार करें, जैसे कि शाब्दिक अर्थ में 'बड़ा–भूकम्प', और यदि वे 'पाँच महीने' का समय अलंकारिक रूप में समझने की बजाए शाब्दिक रूप में समझें? यदि परमेश्वर उन्हें उनके गलत निष्कर्षों पर अटल रहने दे ताकि उनके वचन और उन लोगों के विश्वास की एक गम्भीर और कड़ी जाँच कर सके, तब क्या होगा? ध्यान दीजिये कि प्रकाशितवाक्य 14:12 में यह लिखा है :

**पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

वहाँ लिखा है कि वे ''यीशु पर विश्वास रखते हैं।''

परन्तु उस दिन यह होगा जब परमेश्वर पहले बताये अनुसार करेंगे, क्योंकि परमेश्वर ने अपने वचन की उन (मुहरबन्द) बातों को खोला, परन्तु यदि परमेश्वर लोगों को कुछ 'देखने योग्य' और 'भौतिक' मानकर विचार करने दे कि वे सोचे जो होगा उसे वे अपनी आँखों से देख सकेंगे, पर यदि वैसा नहीं होता है, तब उनकी प्रतिक्रिया क्या होगी जो इन बातों पर विश्वास करने का दावा करते हैं? इस कारण यह मानो ऐसा था कि परमेश्वर ने कहा, हम इसे इसी तरह होने दे इससे एक साथ एक ही समय में बहुत से उद्देश्य पूरे हो जाएंगे, मैं अपने चुने हुओं को स्वर्ण, चांदी, और कीमती पत्थरों के समान परिशुद्ध करूंगा और उसके लिये उन्हें आग से गुजारूंगा। मैं अपने नये बने घर को परखूंगा जो कि चट्टान पर बना है, उसके विरूद्ध आंधी तूफान लाऊंगा और देखूंगा कि उसकी नींव कितनी पक्की है। मैं यही आंधी–तूफान उन दूसरों पर भी भेजूंगा जिनके घर उस चट्टान पर नहीं बने हैं, वे गिर जाएंगे। मेरे लोग आत्मिक अग्नि में परखें जाने के द्वारा यह प्रमाणित करेंगे कि उनके पाप प्रभु यीशु मसीह में जगत की उत्पत्ति से पहले ही क्षमा कर दिये गये है। मसीह के न्याय–आसन के समक्ष, उन्होंने देह में रहते हुये जो भी भले या बुरे काम किये है, वे सब प्रगट किये जाएंगे। चूंकि प्रभु के प्रायश्चित के कार्य के द्वारा जो प्रभु ने सृष्टि के सृजन से पहले सम्पन्न कर दिया था, उन्हें क्षमा किया जा चुका है, वे इस काल की परीक्षा से गुजर जाएंगे। वे उस आग से सुरक्षित रूप में बाहर आएंगे।

इस प्रकार वह दिन प्रगट करेगा कि परमेश्वर ने उनमें कैसा काम किया है। क्या वे बीना किसी दोष के सच्चे मनुष्य है या वे सच्चे नहीं है? क्या उनमें अब भी अविश्वास का धोकेबाज हृदय है? दूसरे शब्दों में, वह कालखण्ड सम्पूर्ण रीति पर प्रगट करेगा कि किसका उद्धार हुआ है और किसका उद्धार नही हुआ है – वह 'दिन' यह प्रगट करेगा। विश्वासी जन उन दिनों में से निकल आएंगें और यह न केवल गेहूँ और चारे, पर भेड़ और

बकरियों को अंतिम रूप में अलग–अलग करने का अवसर होगा। यह परमेश्वर की विस्तृत योजना है जिसमें पृथ्वी पर उस समय रहने वालों के लिये 'जाल फंदा' भी है जिसे परमेश्वर ने उस स्थान में लगाया है।

परन्तु परमेश्वर के लोग बाईबल में खोजते रहे, भले ही सब कुछ वैसा नहीं हुआ जैसा वे सोचते थे। उनके बीच दुविधा थी, संदेह था। लोग चकित थे कि क्या हो रहा था और परमेश्वर के लोग भी कुछ समय के लिये अनिश्चित थे, पर वे एक बात जानते थे कि बाईबल भरोसे के योग्य है। परमेश्वर का वचन सदैव विश्वासयोग्य और सत्य है और परमेश्वर की भेंड़ें उसका स्वर सुनती और वे समझते हैं कि ''मैंने मसीह की आवाज सुनी।'' जिस प्रकार बाईबल आधारित कॅलेंडर में (जो बाईबल से आया) जिस स्थान में जिस बात के विषय में लिखा है, वह वहाँ सिद्ध रूप में है, और यह केवल परमेश्वर के हाथ के द्वारा ही संभव था।

यह सभी शास्त्रलेख सटिक बैठते है और कोई भी मनुष्य इस समय रेखा को विकसित नही कर सकता था जिसमें जलप्रलय से बिल्कुल 7000 वर्षों के बाद 23 वर्षीय महाक्लेश का 8400 वा दिन आता है और फिर 21 मई 2011 यह तिथि इब्रानी कॅलेंडर में 2/17 रेखांकित की हुई थी जो वही दिन है जब परमेश्वर ने नुह के जहाज का दरवाजा बंद किया और महाप्रलय आया। कोई भी मनुष्य इतना बुद्धीमान नही है कि इस तरह की परिस्थिती को क्रमानुसार रखने के लिए बातों को तोडमोड करने में समर्थ हो। परमेश्वर के लोग जानते थे कि : "मैंनें 21 मई 2011 की घोषना में मसीह की आवाज को सुना।"

और कौन सारे संसार के लिये इन अवसरों का द्वार खोल सकता था, एक ऐसा द्वार जिससे वे न्याय के दिन की उद्घोषणा की अद्भुत साक्षी प्राप्त कर सके? सभी देशों ने यह विशेष रूप में सुना, वे भी जिन्हें इस प्रकार की बातों के लिए एक पल भी रूचि नहीं थी कि बाईबल न्याय के विषय में क्या कहती है। वे उससे दूर गये, उन्होंने नहीं माना, वे शाब्दिक रूप में ''आपको पीठ दिखा देते'' यदि आप उस संदेश के साथ जाते, परन्तु फिर भी यह उनकी आँखों के सामने बहुत लम्बे समय तक रखा गया। वे उसकी अनदेखी नहीं कर सके। केवल परमेश्वर ने ही बडे बडे शहरों में न्याय के दिन का संदेश लेकर बसों में सफर के लिए योजना की हो जो भारात और फिलिपिंस जैसे देशों में हजारों बिलबोर्डस् (होर्डिंग्स) लगाए गए यहाँ तक कि आयरलॅण्ड, इंग्लंड, और मध्य–पूर्व में भी। 21 मई 2011 का, अर्थात न्याय के दिन के संदेश की समस्त संसार में अविश्वसनीय रूप में उद्घोषणा की गयी जो इतिहास में अपूर्व और अतुलनीय थी। कौन यह कर सकता था? सच्चे विश्वासीजन उनमें रचे बचे परमेश्वर के वचन को जानते थे और कोई भी उसमें किसी त्रुटि को नहीं दिखा सका। सच्चे विश्वासी जानते थे की यह घोषणा परमेश्वर की ओर से ही थी। आप किसी संप्रदाय या झूठे सुसमाचार के लिये ऐसा बड़ा खुला द्वार नहीं पा सकते, यह परमेश्वर ही है जो चीन, भारत और कोरिया में और ऐसे अन्य देशों में यह द्वार

खोल सकते थे। केवल परमेश्वर के लोगों को यह अवसर सुलभ था क्योंकि परमेश्वर उनके साथ था।

तब परमेश्वर के लोग असंमजस में पड़ गये थे। क्या हो रहा है? यह पहले क्यों नहीं हुआ, जब हमने सोचा था? परन्तु वे जो परमेश्वर के लोग नहीं थे (जिनके भीतर गहिरा कपट था) वे भी शामिल हो गये, कालखण्ड चाहे कितना भी लम्बा था, वे सही बातों के पक्ष में आना चाहते थे, कारण चाहे जो भी हो। वे भी साथ–साथ चलें, परन्तु जब वह नही हुआ (भौतिक रूप से) वे शीघ्र ही भाइयों के विमुख हो गये और कलीसियाओं के लोगों ने उनकी (भाइयों की) जो निन्दा की, उससे अधिक उन्होंने उनकी निन्दा की। दुर्भावना और क्रूरता के साथ उन्होंने कटुवचन कहे। हमें पवित्रशास्त्र के वे पद स्मरण आते है जिनमें इस बारे में चेतावनी दी गई है, लूका का 12 वा अध्याय जिसमें परमेश्वर ने उनके विषय में चेतावनी दी है, कि वे लोग अपने संगी दासों के साथ मारपीट करने लगे क्योंकि प्रभु के आगमन में विलम्ब था। लूका 12:42–46 में यह लिखा है :

**प्रभु ने कहा; वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिस का स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर सीधा दे। धन्य है वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। मैं तुम से सच कहता हूं; वह उसे अपनी सब संपत्ति पर सरदार ठहराएगा। परन्तु यदि वह दास सोचने लगे, कि मेरा स्वामी आने में देर कर रहा है, और दासों और दासियों मारने पीटने और खाने पीने और पियक्कड़ होने लगे। तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन कि वह उस की बाट जोहता न रहे, और ऐसी घड़ी जिसे वह जानता न हो आएगा, और उसे भारी ताड़ना देकर उसका भाग अविश्वासियों के साथ ठहराएगा।**

ध्यान दीजिये, इस वृतान्त से हम जानते हैं कि एक दुष्ट सेवक है, इसका अर्थ है, उस सेवक ने कभी उद्धार नहीं पाया था। यह उस व्यक्ति के जैसा था, जो कहे – ''हाँ, मैं एक मसीही हूँ'' और उन्होंनें स्वयं की पहिचान सच्चे विश्वासियों, सच्चे सुसमाचार और बाईबल के साथ की, परन्तु 'विलम्ब' के कारण यह दुष्ट सेवक अपने मन में कहता है – "अभी मेरे स्वामी के आने में देर है।'' यह बात 21 मई 2011 से बहुत से लोगों के जीवन में सटीक बैठती है जो बाहरी तौर पर आये और अकारण चले भी गये और उन्होंने अपने मन में कहा : "अभी मेरे स्वामी के आने में देर है।'' वे अपने साथी सेवकों के साथ बुरा व्यवहार करने लगे, वे क्रोधित हुये – ''क्या मैं तुम्हें मूर्ख दिखता हूँ।''

वे परेशान थे और उनके अहंकार को चोट पहुँची क्योंकि उन्होंने प्रभु के विरूद्ध खड़े होने का साहस किया और सच्चे विश्वासियों पर दोष लगाया, विशेष रूप में उन सच्चे विश्वासियों के विरूद्ध जो लगातार आत्मिक न्याय की बातें करते और बाईबल पर उन बातों के लिये भरोसा करते थे जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह और दया करके अंत के समय में अपने लोगों पर प्रगट किया था। यह उन दुष्ट सेवकों के क्रोध को और अधिक भड़काने

वाली बात थी क्योंकि यह उन्हें लगातार स्मरण दिलाता रहता था, कि उन्होंने उस काल को मूर्खतापूर्ण और उनके विश्वास को मूर्खता का काम समझा था। इस कारण वे उग्र हो उठे और ''दासो और दासियों को मारने–पीटने लगे और खाने–पीने और पियक्कड़ होने लगे।''

यह रूचिकर विचार है, प्रभु के आने में विलम्ब हमें इस्राएल का स्मरण कराता है जब जंगल के मार्ग में मूसा पर्वत पर गया और उसके वापस लौटने में विलम्ब हुआ। मूसा कितने दिन पर्वत पर रहा? चालीस दिन और चालीस रातें, किन्तु उस कालखण्ड में इस्राएलियों ने अपने लिये देवता बना लिया, और 'उठकर खेलने लगे' क्योंकि मूसा के लौट कर आने में विलम्ब हुआ। परन्तु 40 दिन और 40 रातों के बाद मूसा लौट कर आया, और उसने मूर्तिपूजा होते हुये और इस्राएल के बहुत से लोगों के हृदयों की वास्तविक दशा को देखा। परमेश्वर 1600 दिनों के अंत में संम्भवतः यही करने जा रहे हैं। 21 मई 2011 को न्याय का दिन आरंभ हुआ और वह संम्भवतः 7 अक्तुबर 2015 तक 1600 दिनों के लिए लगातार चलता रहेगा। 1600 दिन 40 x 40 है, और 1600 वा दिन 40 के 40 का अंत होगा और स्पष्ट है कि प्रभु आने में देरी कर रहे है, यद्यपि वे 21 मई 2011 को न्याय करने के लिए आए। परन्तु जब परमेश्वर ने आत्मिक न्याय को लम्बा किया, तब संसार के वास्तविक विनाश, पुनरूत्थान और स्वर्ग पर उठाये जाने में विलम्ब हुआ।

और जब इस दिर्घकालीन न्याय के दिन के अंत में परमेश्वर सब बातों का अंत करने आएंगे, तब क्या पाएंगे? वे पाएंगे जैसे मूसा ने पाया था जब वह पर्वत से नीचे उतरा, ऐसे लोग जो परमेश्वर के वचन के सत्य से विमुख हो चुके थे ओर वे मूर्तिपूजा में लिप्त हो चुके थे। वे पाएंगे कि लोग राजनीति में रूचि ले रहे है, सामाजिक सुसमाचार में रूचि ले रहे है, और कलीसियाओं मे वापिस लौट जाने में रूचि ले रहे हैं, वे सब बातों में रूचि लेते है परन्तु उसमें नहीं जिसमें उन्हें रूचि लेना चाहिए, अर्थात् परमेश्वर के वचन के सत्य में। यह एक भयानक स्थिति है और पर्वत पर मूसा के साथ जो हुआ उसके समकक्ष है।

आइये हम प्रकाशितवाक्य 14:12 को फिर से पढ़ें, ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में है।'' धीरज धरने की आवश्यकता है। लूका 21:19 में हम पढ़ते हैं, ''अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।'' परीक्षा की कठोरता और न्याय के दिनों के दुख के कारण धीरज धरने की आवश्यकता है। तो भी परमेश्वर के लोग प्रभु की लगातार प्रतीक्षा करते और उसके वचन, 'बाईबल' पर भरोसा रखते हैं। वे जानते है कि जब उन्होंने सुना, वह मसीह की आवाज़ थी, वे जानते है कि सब कुछ अपने आप एक निश्चित समय और स्थान में नहीं हो रहा है। वे लोग जो उद्विकास पर विश्वास करते हैं वे यह मानते हैं कि "कोई सृष्टिकर्त्ता नहीं है। इन फूलों, या तितलियों या सभी पशुओं के सृजन में कोई परमेश्वर शामिल नहीं है।'' वे ऐसा ही सोचते हैं जबकि सृष्टि की ये बातें जटिल है और स्वाभाविक तौर पर स्पष्ट है कि उसकी संरचना की गई है। इसी प्रकार, इतिहास का बाईबल बाईबल आधारित कॅलेंडर भी जटिल है किन्तु सभी बातें बहुत सुन्दरता के साथ एक दूसरे से जुड़ी

और संगत रखती है, और कुछ लोग कहते है, ''ओह, यह कुछ नहीं, यह कुछ भी नहीं है!'' जो भी हो, यह स्वाभाविक रूप से संरचित होने के सत्य से इन्कार है और स्वाभाविक रूप से परमेश्वर के हाथ को दर्शाता है।

परमेश्वर ने चाहा तो अगले अध्ययन में हम 'धीरज' इस शब्द को अधिक निकटता से देखेंगे। यह इतना दिलचस्प शब्द है कि मैं समझता हूँ कि इस शब्द के भावार्थ को समझने और जानने में कि इस शब्द के पीछे क्या अभिप्राय है, हमारे लिए यह सहायक होगा।

**Revelation 14 Series, Study #30 by Chris McCann, originally aired September 22, 2014**

प्रकाशित वाक्य 14 श्रृंखला, अध्ययन क्रमांक 30, क्रिस मॅकन, मूल प्रसारण 22 सितम्बर 2014

नमस्कार! ई–बाइबल सहभागिता के प्रकाशितवाक्य के बाइबल अध्ययन में आपका स्वागत है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 14 के अध्ययन में यह अध्ययन क्रमांक 30 है और हम प्रकाशित वाक्य 14:12 का अध्ययन कर रहे है :

**पवित्र लोगों का धीरज इसी में है, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते, और यीशु पर विश्वास रखते हैं॥**

एक बार फिर यह बड़ा प्रश्न है कि यह पद क्यों न्याय के दिन के विवरण के बीच में रखी गई है और परमेश्वर क्यों जोर दे रहे है कि – ''पवित्र लोगों का धीरज इसी में हैं, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते और यीशु पर विश्वास करते है?'' निसंदेह ही इसका उत्तर है क्योंकि परमेश्वर के लोग पृथ्वी पर 'न्याय के दिन' में रहेंगे और यह वर्तमान समय पर लागू होता है क्योंकि अब न्याय का दिन है और इसी कालखण्ड में परमेश्वर के लोग 'धीरज' पर अमल कर रहे है।

जब हम 'धीरज' जैसा शब्द पढ़ते हैं, हमें सावधान रहना चाहिये कि हम उसे अपने सांसारिक ज्ञान और समझ के आधार पर परिभाषित न करें। उदाहरण के लिये, जब हम किसी ऐसे व्यक्ति से बात करते हैं जिसे बाईबल के बारे में कुछ पता नहीं, और आप कहते हैं – ''हमें धीरज धरना चाहिये'' तो वे धीरज का वैसा अर्थ समझेंगे जैसा कि हम आमतौर पर समझते हैं। इसका अर्थ होगा प्रतीक्षा करना, जब तक कि हम जो चाहते है मिल न जाये या किसी व्यक्ति को उसके व्यवहार के कारण या सोच के कारण सहन करना इत्यादि। परन्तु जैसा लोग इस शब्द को आमतौर पर समझते हैं, उसमें और इसके वास्तविक अर्थ में बड़ा अन्तर है। हम बाईबल के किसी शब्द को उसके सामान्य अर्थ से नहीं समझ सकते। हमें देखना होगा कि बाईबल उसे कैसे परिभाषित करती है। अक्सर परमेश्वर की परिभाषा वैसी नही होती जैसा संसार उस शब्द की परिभाषा करता है। यही बात शब्द, 'धीरज' के साथ भी है।

धीरज के लिये मूल ग्रीक शब्द hupomone स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 5281 है। यह एक मिश्रित शब्द है, जो अलग–अलग दो ग्रीक शब्दों से बना है एक है Hupo स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 5259 है और दूसरा है mone स्ट्रॉंग की शब्द सूची में # 3306 है। मेरे विचार से Hupo की बेहतर व्याख्या 'आधीनता में होना' है, और mone शब्द का अनुवाद 'बने रहना' या 'धीरज धरकर रहना' या 'लगातार' है।

मैं बाईबल में कुछ स्थलों को देखना चाहता हूँ जहाँ mone शब्द का उपयोग किया गया है, उसके बाद हम वापस अपने शब्द पर आएंगे, और मैं समझता हूँ कि हमें बेहतर समझ प्राप्त होगी कि इस शब्द से परमेश्वर का क्या अभिप्राय है। यूहन्ना 8:31 में यह लिखा है :

**तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्हों ने उन की प्रतीति की थी, कहा, यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।**

यहाँ ग्रीक शब्द mone है जिसका अनुवाद (लगातार) बने रहोगे, किया गया है। यदि तुम मसीह के वचन में (लगातार) बने रहोंगे, तब तुम मसीह के चेले कहलाओगे। यीशु का इस प्रकार कथन कहना क्या रूचिकर और महत्वपूर्ण नहीं है? वे ऐसा क्यों कहते हैं? अच्छा वे इसलिये कहते हैं कि 'बीज' बहुत से हृदयों में बोया जाता है, पर कभी–कभी जहाँ बोया गया, वहाँ अधिक गहिराई में नहीं गया। तुरन्त ही आनन्दमय प्रतिक्रिया होती है और अकसर ऐसी दशा में आप सुनते हैं कि लोग कहते है, ''ओह! वह व्यक्ति तो प्रभु के लिये मानो जल रहा है!'' मैं ऐसे कुछ लोगों से वास्तव में मिल चुका हूँ जिनके बारे में कहा जाता था कि वे रोमांच और उत्साह से भरपूर है। वे सारा दिन बाईबल की बातें करना चाहते है (और इसमें कुछ गलत नहीं है) परन्तु ऐसे अवसर आते हैं जब वह एक सतही प्रतिक्रिया होती है, लेकिन उनके हृदय के भीतर गहिराई में कुछ परिवर्तन नहीं होता। हो सकता है बौद्विक परिवर्तन हो या उनके व्यक्तित्व से संबंधित हो, जबकि वे आरम्भ में बड़े रोमांच के साथ इन बातों का पालन करते थे। परन्तु चूंकि उनमें अधिक गहिराई नहीं थी, भूमि उथली थी, और परमेश्वर के वचन की जड़ें जमी नहीं (मसीह जो यिशै की जड़ है, वह उनमें नहीं है) वे अपनी आरम्भिक दशा से पीछे हट जाते हैं और वे कभी भी सुसमाचार की सही समझ को प्राप्त करने के स्थान में नहीं आते। यदि आप किसी गलत धर्मशिक्षा को लेकर रोमांचित और उतावले है, तब क्या होगा? उदाहरण के लिए, कुछ लोग ऐसे है जो अन्य अन्य भाषाए बोलने में उत्साहित होते है। वे 'पीछे की ओर गिरने की शिक्षा के लिये रोमांच रखते है। वे शारीरिक चंगाईयों और करिश्माई सुसमाचार के अन्य पहलुओं को लेकर लगातार उत्तेजित होते रहते है। या फिर वे 'मसीह को ग्रहण करने के प्रति आतुरता दिखाते और अन्य गलत बातों के पीछे रोमांचित होते हैं। इन बातों से कुछ भला नहीं होता। संसार गलत बातों के पीछे लगातार रोमांचित और अधीर होता रहता है। वे भावनात्मक रूप में एक ऊँचे स्थान पर लाये जाते हैं, परन्तु भावनाओं, अनुभूतियों और रोमांच का (वास्तव में) यहाँ कोई अर्थ नहीं है।

ऐसी घटनाएं देखने में आती है जब लोग सच्चे सुसमाचार को सुनते हैं, रोमांचित होते हैं, परन्तु उनमें कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं आता इस कारण वे (बाद में) उस दशा को छोड़ देंगे, यही कारण है कि यीशु का यह कथन महत्वपूर्ण है – ''यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे'' यह बात विशेष रूप में अधिक सत्य है जब वचन के कारण क्लेश या सताव आता है। अब हम देखेंगे कि क्या सचमुच आपका हृदय परिवर्तन हुआ है? क्या आप नयी सृष्टि है? क्या आप परमेश्वर के चुने हुये व्यक्ति है? क्या परमेश्वर ने आपका उद्धार किया है? यह बात प्रगट हो जाएंगी, एक दिन या एक क्षण में नहीं, विश्वास के एक निर्णय या उसके दावे (अंगीकार) के कारण नहीं, पर लगातार बने रहने के कारण, एक लगातार बलवती इच्छा के द्वारा कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार करे, और दृढ़तापूर्वक परमेश्वर के वचन के सत्यों पर बने रहे, जिन्हें विश्वासयोग्यता के साथ सिखाया गया था और जो "यीशु पर (लगातार) विश्वास रखते है।''

यह बहुत दुखदायी और कष्ट देने वाली बात है जब लोग सुसमाचार के साथ कुछ समय के लिये, शायद कुछ वर्ष चलते है, पर जब तीव्र क्लेश का समय आता है जैसा महाक्लेश के दिनों में हुआ, या परमेश्वर के वचन के कारण सताव आता है, वे पीछे हट जाते हैं। हमें कहना होगा कि ऐसा क्लेश के बाद, 21 मई 2011 के बाद हो रहा है, वहा विश्वास से पीछे हटना हुआ क्योंकि लोगों ने बाईबल की विश्वासयोग्य शिक्षाओं को त्याग दिया। वे अब अपनी पहिचान उस समयरेखा के साथ नहीं चाहते थे या फिर उन्होंने सोचा कि यह समय कलीसियाओं में वापस लौटने का है, और उन्होंने कलीसियाई युग के अन्त से संबंधित इन विचारों का परित्याग कर दिया। अब वे विश्वसनीय धर्मशिक्षाओं में लगातार बने नहीं रहे जो उन्हें सिखाई गई थी, जब परमेश्वर ने अंत के दिनों में इस जानकारी का खुलासा किया था। परन्तु वे पीछे हट रहे है और मूलरूप में यही वह बात है जब परमेश्वर कहते हैं, उनके विषय में जिनके हृदय मिस्र लौटने की अभिलाषा करते है और वे अपने लिये कोई अगुवा चुनना चाहते थे कि मिस्र को लौट चले जैसा कि इतिहास में यह वास्तव में घटा। बाईबल का यही आशय है जब बाईबल हल पर हाथ रखने और पीछे देखने के विषय में कहती है। बाईबल के कथन 'लूत की पत्नी को स्मरण रखो' का यही अभिप्राय है। लूत की पत्नी का अपराध क्या था? वह सदोम से बाहर निकल भागी पर उसने पीछे मुड़कर देखा। परमेश्वर एक महत्वपूर्ण रूप में इसके विरूद्ध चेतावनी देते हैं। हमें पीछे पलटकर नहीं देखना है पर आगे की ओर, उस निशाने की ओर, जो मसीह यीशु में हमारी उच्च बुलाहट है बढ़ते चले जाना है। हमें उस दौड़ को दौड़ना है जो हमारे लिये निर्धारित है और पीछे नहीं देखना है। ये सभी विचार एक अर्थ में यहाँ सार रूप में एकत्रित है, ''यदि तुम मेरे वचनों में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।''

एक और जगह जहाँ शब्द mone आया है, 2यूहन्ना, पद 9 है। परमेश्वर ने यूहन्ना को प्रेरणा दी कि 1यूहन्ना, 2यूहन्ना, 3यूहन्ना और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लिखे। यूहन्ना के सुसमाचार का लेखक कौन है इस पर कुछ संदेह है, संभव है कि लाजर ने उसे लिखा,

परन्तु हम निःसंदेह जानते हैं कि 2यूहन्ना, परमेश्वर की प्रेरणा से यूहन्ना ने ही लिखा था, 2यूहन्ना 1:9 में यह लिखा है :

**जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उस की शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।**

यहाँ पर 'बना रहना' यह शब्द है। आधुनिक अंग्रेजी भाषा में इस शब्द का अधिक उपयोग नहीं किया जाता है। एक बहुत ही सुंदर गीत है – मुझ में बने रहो (Abide with me), परन्तु अधिकतर हम इस शब्द के बारे में विचार नहीं करते। शब्द 'लगातार' हमारे लिये सहायक है क्योंकि यह वही ग्रीक शब्द का अनुवाद है। इस कारण हम यह पद इस तरह से पढ़ सकते है – ''जो कोई मसीह की शिक्षा से आगे बढ़ जाता है और उसमें बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है और पुत्र भी'', अब प्रश्न है कि मसीह की शिक्षा क्या है? यहाँ 'शिक्षा' को एक अन्य स्थल पर भिन्न रूप में अनुवाद किया गया है। तीतुस 1:9 में लिखा है ''वह विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे'' यहाँ धर्मोपदेश के लिये 'वचन जो सिखाया गया था' आया है, और यह शब्द 'धर्मशिक्षा' का अनुवाद है। धर्मशिक्षा वह है जो बाईबल से हमें सिखाई जाती है। हम बाईबल पढ़ते है, और निश्चय ही यह बहुत अच्छी बात है, परन्तु परमेश्वर सिर्फ पढ़ने की अपेक्षा नहीं करते कि हम बस पढ़ें और कुछ न समझे। वे नहीं चाहते कि हम उनके वचन से अज्ञात रहे। जब हम बाईबल पढ़ते हैं, हम सीखते जाते है।

एक बड़ी गलती जो कुछ लोगों ने की है विशेषकर बाद के दिनों में कि वे किसी भी शिक्षक पर भरोसा नहीं करते, और उसमें कुछ गलत नहीं है। मैं भी नहीं करता और न हम में से किसी को करना चाहिये। परमेश्वर कहते हैं कि हम परखें और देखे कि क्या वे बातें बाईबल के विरूद्ध है, वे कहते है, ''आत्माओं को परखो'' क्योंकि हमें किसी मनुष्य पर भरोसा नहीं करना है। इस कारण हम हमेशा परखना चाहते हैं कि जो कहा गया वह बाईबल के विरूद्ध तो नहीं ताकि हम जान सकें कि वह सत्य है या नहीं परन्तु ये लोग बातों को बढ़ाते हैं और परमेश्वर जहाँ तक पहुँचे है उसके भी आगे चले जाते हैं, और जब वे ऐसा कर रहे हैं, हमें कहना होगा कि वे परमेश्वर से अधिक पवित्र बनने का प्रयास कर रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर ने यह आज्ञा नहीं दी। वे कहते है अब आगे सिखाने वालों की आवश्यकता नहीं रही – अब कोई शिक्षक नहीं चाहिये – केवल बाईबल पर्याप्त है। इसलिये वे 'फेसबुक' पर पवित्रशास्त्र की पदें लिखते और कभी–कभी उन पर टिप्पणी भी करते, जो उनकी स्वयं की धर्मशिक्षा 'शिक्षक नहीं चाहिये' के विपरीत जाती है। परन्तु वे पवित्रशास्त्र के वचन फेसबुक पर लिखते और कहते – ''केवल बाईबल की सुनो।''

परन्तु परमेश्वर ने हमें पवित्रशास्त्र क्यों दिया? 2तीमुथियुस 3:16 के अनुसार, ''सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने

और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।" परन्तु वे इंकार करते और कहते है – ''यह पवित्रशास्त्र का वचन है, मैं इसे फेसबुक पर पोस्ट करूंगा", पर वे उसे धर्मशिक्षा कहने का साहस नहीं करते और न कहते कि पवित्रशास्त्र का यह अर्थ है क्योंकि ऐसा करने का अर्थ धर्मशिक्षा की उद्घोषणा करना है। वे अपने इन्कार में वे बाईबल के विरूद्ध जा रहे हैं कि परमेश्वर ने उनके वचन को 'धर्मशिक्षा' के लिये दिया है। इस कारण हम पढ़ सकते हैं, उदाहरण के लिये, बाईबल के अनुसार परमेश्वर पिता है और वह आत्मा है, और वह पुत्र है, और हम इन सभी बातों को एक साथ मिलाकर कह सकते हैं कि बाईबल की शिक्षा है, परमेश्वर एक है पर बाईबल उसे त्रियेक ईश्वर के रूप में प्रगट करती है – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, उसके तीन व्यक्तित्व है पर परमेश्वर एक है, और यह एक धर्मशिक्षा है। परमेश्वर बाईबल के पाठकों से यही अपेक्षा करते है क्योंकि यह उनके द्वारा पवित्रशास्त्र दिये जाने के उद्देश्यों में से एक है क्योंकि समस्त पवित्रशास्त्र 'धर्म की शिक्षा' के लिये लाभदायक है।

तब परमेश्वर मनुष्यों को भिन्न भिन्न तरीकों से योग्य बनाता है कि वें शिक्षा दे, बाईबल जो कहती है उन धर्मशिक्षाओं की उद्घोषणा करे, और हम उन बातों के विषय में कह रहे हैं जो पवित्रशास्त्र के अनुसार सही और विश्वसनीय है (जैसे त्रिएकता की धर्मशिक्षा, चुने जाने की धर्मशिक्षा) तब हम जानते हैं कि परमेश्वर ने क्या आज्ञाएं दी है और यह परमेश्वर की शिक्षा है! एक और कारण है कि परमेश्वर पवित्रशास्त्र को मिला–मिलाकर जाँचने के लिये कहते है क्योंकि उस दशा में 'पवित्र आत्मा' हमें सिखाता है। स्मरण रखें कि तीतुस 1:9 में लिखा है कि धर्मशिक्षा वह है जो सिखाई गयी है। यदि हम बाईबल के अध्ययन तरीकों का अनुपालन करते है, पवित्र आत्मा वह शिक्षक है जो हमें मसीह की धर्मशिक्षा को सिखाता है। यही कारण है कि 2यूहन्ना, उसकी पद 9 में कहा गया है, ''जो उससे आगे बढ़ जाता और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसमें परमेश्वर नहीं।'' धर्मशिक्षा बाईबल से विकसित होती और उसी में से निकाली जाती है, और यह पूरी बाईबल से एक पद को दूसरे से मिला–मिलाकर होता है और परमेश्वर यह जिम्मेदारी उठाते हें कि पवित्र आत्मा हमें सिखाए। मसीह की शिक्षा में अर्थात् बाईबल की सच्ची एवं विश्वसनीय शिक्षाओं में बने रहना आवश्यक है।

जैसा कि हम देख चुके है, समस्या यह नहीं है कि बाईबल की सच्ची और विश्वसनीय शिक्षाएँ प्रचार नहीं की जाती कि लोग उन्हें सुन न सके। ओह वे उसे ठीक–ठीक सुनते हैं। कलीसियाओं के लोगो ने कलीसियाई युग के अंत के विषय में सुना है। वे जो 'स्वतंत्र इच्छा' के सिद्धांत को मानते है उन्होंने 'चुने जाने' के विषय में भी सुना है। वे जो कहते है कि हमें सातवें दिन अर्थात् सब्त के दिन आराधना करनी चाहिये, उन्होंने सुना कि परमेश्वर ने सब्त का दिन बदलकर 'रविवार' Sunday कर दिया और अन्य बातें। उन्होंने सुना और शायद विश्वास भी किया और कुछ समय तक सही धर्मशिक्षा मानकर चलते भी रहे, परन्तु एक समय आया जब वे बदल गये। किसी समय, कुछ हुआ और उन्होंने पवित्रशास्त्र की

धर्मशिक्षा को मानना बन्द कर दिया। हो सकता है कि कोई स्वाभाविक कारण हो और कुछ यह बात समझ भी ले कि रविवार ही सब्त है, और हमें 'प्रभु के दिन' कोई काम नहीं करना चाहिये। परन्तु बाद में नौकरियों के चलते परिवर्तन आता है। यह नहीं कि उनके कार्य की प्रकृति 'आकस्मिक या संकट कालीन' सेवा की है जैसे कि डॉक्टर या नर्स (चिकित्सक या परिचारिका) पर यह एक नियमित कार्य हो जिसमें उन्हें रविवार के दिन काम पर जाना पड़े और तब वे इस मसले को एक दूसरी दृष्टि से देखने लगते है। संभव है, कुछ वर्षों पूर्व, यदि आप उनसे पूछते तो वे रविवार के लिये अपनी सहमति जताते परन्तु अब जबकि वे रविवार को काम करते हैं, वे कहते है – ''मैं ऐसी बातों पर अब विश्वास नहीं करता।'' आपने देखा, उस बिन्दु पर वे परखे गये और वे असफल निकले। अब वे उस विश्वास या धर्मशिक्षा को नहीं मानते ताकि अपनी अनाज्ञाकारिता को सही ठहरा सके।

तलाक की धर्मशिक्षा भी एक उदाहरण है (और यह उन विशेष व्यक्तियों से संबंधित है जिन्हें मैं जानता हूँ) और यह व्यक्ति मानता था कि तलाक नहीं होना चाहिये, कारण कुछ भी क्यों न हो ''मैं मानता हूँ कि यह बाईबल की शिक्षा है'' यह व्यक्ति तलाकशुदा था और अनेक वर्षों तक इस धर्मशिक्षा में बना रहा, परन्तु फिर उन्हें कोई मिली। वे वास्तव में उसे चाहने लगे और उनके बीच अच्छा तालमेल था, कुछ समय के बाद, वे फिर बाईबल के पन्ने पलटने लगे और पवित्रशास्त्र में खोजबीन करने लगे। अब यह तो है कि आपको बाईबल में एक या दो पदें ऐसी मिल जाएगी, जिनका आप दूसरा मतलब निकाल सके। परमेश्वर ने बाईबल को इसी प्रकार से लिखा है कि लोग जैसा चाहते है वैसा कर सके और कहीं न कही वे उनके पाप को उचित ठहरा सके। धीरे–धीरे पर पक्की तौर पर वे अपने अध्ययन के निष्कर्ष पर आये और कहने लगे – ''मैं नहीं सोचता कि परमेश्वर किसी विश्वासी को विवाह–विच्छेद (तलाक) से रोकते हैं, मैंने बाईबल की पदों को देखा है और मैं समझता हूँ कि परमेश्वर तलाक के बाद विवाह करने की अनुमति देते है" वे सही धर्म शिक्षा में (लगातार) बने नहीं रहे। एक बार फिर इस संसार की परिस्थितियों और चिन्ताओं ने बढ़कर वचन को दबा दिया। कार्य के स्थान में या उनके व्यक्तिगत जीवन में विकसित होने वाली स्थितियों के द्वारा वे परखे गये।

इसका संबंध 21 मई 2011 जैसी बड़ी घटना से भी हो सकता है, जिसे सारे संसार ने देखा और ये लोग 'एक पाँव' से तैयार थे उन्होंने बहुत सी धर्मशिक्षाओं को माना और वे समझ गये कि परमेश्वर ने बाईबल के इतिहास की समय रेखा से संबंधित पवित्रशास्त्र का खुलासा किया था, परन्तु जब उन्हें जैसा बताया गया था, वैसा नहीं हुआ, तब वे बाईबल आधारीत कॅलेंडर पर संदेह करने लगे। उनके संदेह का कारण यह नहीं था कि उन्होंने बाईबल में खोजा और कुछ त्रुटि पाई पर उनके देखने में त्रुटि थी, वे शारीरिक आँखों से उन बातों को नहीं देख सके जो वे देखना चाहते थे। यह उनके देखने की कमी थी कि वे आँखों से किसी 'न्याय' को नहीं देख सके। वहाँ से वे कलीसियाई युग के अंत की शिक्षाओं पर संदेह करने लगे, यद्यपि वे कभी उसमें दृढ़ थे, उन्हें उस पर निश्चय था, और

वे मानते थे कि कलीसियाई युग समाप्त हो चुका था। परन्तु अब वे 21 मई 2011 के बाद कुछ वर्षों से 'फेसबुक' पर (या और कही) उनके चर्च की धर्मशिक्षाओं के विषय में लिख रहे हैं। यदि आप उनसे बातचीत करे, वे कहेंगे, 'जी हाँ, मैं वापस चर्च में आ गया हूँ – मुझे नहीं लगता कि कलीसियाई युग के अंत का विचार सही है।" वे परमेश्वर के वचन में और मसीह की शिक्षा में 'लगातार' बने नहीं रहे; और यह भयंकर भूल है। आइये, हम इस पद को एक बार फिर पढ़ें, 2यूहन्ना 1:9 में लिखा है :

**जो कोई आगे बढ़ जाता है, और मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उस की शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी।**

परमेश्वर इसे बार–बार दोहरते हैं (और वे किसी भी धर्मशिक्षा के लिये यह कर सकते है) जबकि वे हमें धर्मशिक्षा के आधार पर परखते है। आप कहते है कि आप विश्वास करते हैं, पर यदि परिस्थितियाँ बदले या नये रूप में विकसित हो और आप उस स्थान में रखे जाये तो क्या होगा? आपको वचन के कारण दुख उठाना होगा। संभव है कि क्लेश या सताव का सामना करना पड़े, जो वहाँ उठे, यदि आप रविवार को काम न करे, संभव है कि आपको आर्थिक रूप में हानि हो। आपके व्यक्तिगत जीवन में कुछ तकलीफें हो सकती है यदि आप उस स्त्री को जाने दे, भले ही बाईबल के अनुसार आप दोबारा विवाह नहीं कर सकते और आप उस स्त्री से संबंध भी नहीं रख सकते क्योंकि आप अब भी अपनी प्रथम पत्नी के साथ विवाहित है। प्रत्युत्तर क्या है – ''हाँ, पर बहुत अकेलापन है'' आप कसौटी पर रखे गये है।

ऐसी धर्मशिक्षा को मानना अधिक आसान है जिसमें आप परखे नहीं जाते, वह केवल एक बौद्धिक अभ्यास है। आप कह सकते हैं – ''हाँ, मैं विश्वास करता हूँ कि एक बार 21 मई 2011 के आ जाने के बाद किसी प्रकार उद्धार नहीं, क्योंकि मेरा मानना है कि मैं आकाश पर उठा लिया जाऊंगा और इस संसार से हटा दिया जाऊंगा, और जो शेष बचेंगे उनके लिये उद्धार नहीं है, उस समय पुरूष, स्त्रियाँ और बच्चे भी होंगे शायद शिशु भी, जो छोड़ दिये जाएंगे, परन्तु मैं पक्की तौर पर मानता हूँ कि उद्धार नहीं मिलेगा... जब तक की परमेश्वर ऐसा प्रबंध करे कि मैं पृथ्वी पर जीवित छूट जाऊं, उन दिनों में, और अब यह स्थिति मुझे, मेरे परिवार को व्यक्तिगत रूप में (मेरी संतानें और मेरे नाति–पोते) प्रभावित करती है और दूसरों को भी, इसलिये क्या अब भी मैं उन दिनों के क्लेश के बाद से संबंधित उन शिक्षाओं को मानना जारी रखूंगा जिनके विषय में बाईबल सिखाती है? नहीं अब मैं उन शिक्षाओं को जरा भी नहीं मानता।'' अच्छा, आप उन पर विश्वास करते थे जब उनका आप पर प्रभाव नहीं था, परन्तु परमेश्वर ने आपको कसौटी पर रखा कि क्या आप तब भी परमेश्वर के वचन में लगातार बने रहेंगे? और बहुत से लोग उस धर्मशिक्षा और अन्य धर्मशिक्षाओं में लगातार बने नहीं रहते जो कि एक दुखद बात है।